केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
शिक्षा केन्द्र, २, सामुदायिक केन्द्र
प्रीत विहार दिल्ली-११००९२

सीबीएसई/शैक्ष०/२००९ | दिनांकः १२.११.२००९

परिपत्र स०:४२

सीबीएसई से संबद्ध
सभी स्वतंत्र विद्यालयों के प्रमुख

विषयः द्वितीय सत्र (अक्टूबर २००९ - मार्च २०१०) के लिए कक्षा ९वीं में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.)

प्रधानाचार्य महोदय/महोदया,

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का परीक्षा सुधार तथा सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) संबंधी दिनांकः २०.०९.२००९ का परिपत्र सं० ३९ अक्टूबर २००९ से कक्षा ९वीं में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) को मजबूत बनाते हुए छात्रों के सम्पूर्णतावादी मूल्यांकन की अपेक्षा करता है। कक्षा ९वीं के विद्यार्थियों का निर्धारण सी.सी.ई. के माध्यम से विद्यालयों द्वारा स्वयं किया जाएगा। मजबूत सी.सी.ई. योजना कक्षा ९वीं के द्वितीय सत्र (अक्टूबर २००९ - मार्च २०१०) के लिए लागू होगी।

रचनात्मक निर्धारण तथा योगात्मक निर्धारण का भारांक निम्नानुसार होगा-

सत्र	निर्धारण का प्रकार	शैक्षणिक सत्र में भारांक की प्रतिशतता	सत्रवार भारांक	योग
प्रथम सत्र (अप्रैल-सित०)	रचनात्मक निर्धारण १	१० प्रतिशत	रचनात्मक निर्धारण - १+२=२० प्रतिशत	रचनात्मक=४० प्रतिशत
	रचनात्मक निर्धारण २	१० प्रतिशत		
	योगात्मक निर्धारण १	२० प्रतिशत	योगात्मक निर्धारण-१ =२० प्रतिशत	
द्वितीय सत्र (अक्टूबर - मार्च)	रचनात्मक निर्धारण ३	१० प्रतिशत	रचनात्मक निर्धारण - ३+४=२० प्रतिशत	योगात्मक=६० प्रतिशत योग=१०० प्रतिशत
	रचनात्मक निर्धारण ४	१० प्रतिशत		
	योगात्मक निर्धारण २	४० प्रतिशत	योगात्मक निर्धारण-२ =४० प्रतिशत	

नोट- चुंकि योजना इस वर्ष के द्वितीय सत्र से आरंभ की जा रही है, निम्नलिखित विकल्पों में से किसी एक को विद्यालयों में अपनाया जा सकता है।

१. प्रत्येक रचनात्मक निर्धारण का भारांक २० प्रतिशत होगा और योगात्मक निर्धारण का ६० प्रतिशत होगा।
२. रचनात्मक निर्धारण १ और रचनात्मक निर्धारण २ की स्थिति में प्रथम सत्र का आंतरिक निर्धारण यदि विद्यालय द्वारा किया गया हो, १० प्रतिशत+ १० प्रतिशत तक कम किया जा सकता है।

३. सभी विषयों के लिए योगात्मक निर्धारण के लिए परीक्षा संरचना संबंधी ब्यौरा द्वितीय सत्र के लिए पाठ्यक्रम और अनुसरण किए जाने वाले रचनात्मक निर्धारण परिशिष्टों में दिए गए हैं।

इसे कक्षा ९वीं एवं १०वीं के लिए सीखाने और सीखने में शामिल सभी छात्रों एवं अध्यापकों के ध्यान में लाया जाए।

भवदीय,

(विनीत जोशी)
अध्यक्ष एवं सचिव

संलग्नक : परिशिष्ट १-५

प्रतिलिपि :- निदेशालयों/केवीएस/एनवीएस/सीटीएसए के प्रमुखों को इस अनुरोध के साथ प्रतिलिपि प्रेषित कि वे अपने अपने **अधिकार के अंर्तगत के सभी संबंधित विद्यालयों में सूचना का प्रसार करें** :-

१. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, १८, इनूस्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-११००१६ ।
२. आयुक्त, नवोदय विद्यालय समिति, ए-२८, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली ।
३. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सरकार, पुराना सचिवालय, दिल्ली -११००५४
४. जन अनुदेशन निदेशक (विद्यालय), राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सचिवालय सेक्टर-९, चण्डीगढ़-१६००१७
५. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर-७९११११
६. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक, सिक्कम-७३७१०१
७. सचिव, केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय प्रशासन, ई एफ एफ ई एस एस प्लाजा, सैक्टर-३, रोहिणी, दिल्ली-११००८५
८. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को इस अनुरोध के साथ कि वे अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाले विद्यालयों के सभी प्रमुखों को कार्रवाई एवं अनुपालन के लिए षीघ्र प्रेषित करें ।
९. सीबीएसई के अध्यक्ष महोदय के कार्यकारी अधिकारी को सूचनार्थ ।
१०. सचिव, सीबीएसई के व्यक्तिक सहायक को सूचनार्थ ।
११. परीक्षा नियंत्रक, सीबीएसई के व्यक्तिक सहायक को सूचनार्थ ।
१२. संयुक्त सचिव (आई.टी.), सीबीएसई को इस अनुरोध के साथ कि वे इस परिपत्र को वेबसाईट पर अपलोड करें ।
१३. अध्यक्ष सीबीएसई के ई.ओ अधिकारी, (शिक्षा अधिकारी)।

शिक्षा अधिकारी

परीक्षा संरचना : कक्षा ६वीं
विषयः विज्ञान
द्वितीय सत्र (अक्टूबर २००६-मार्च २०१०)

प्रश्न पत्र का डिजाइन

अधिकतम अंक-८० अवधि -३ से ३½ घंटे

प्रश्नों के प्रकार	प्रश्नों की सं०	प्रत्येक प्रश्न के लिए अंक	कुल अंक
i) अति लघु उत्तर टाइप	०८	०१	०८
ii)लघु उत्तर टाइप।	०६	०२	१८
iii) लघु उत्तर टाइप ।।	०३	०३	०६
vi) दीर्घ उत्तर टाइप	०३	०५	१५
v) एम सी क्यू (सिद्धांत आधारित)	०१(१५ भाग)	(1x15)	१५
vi) एम सी क्यू (प्रयोगात्मक कौशल)	०१(१५ भाग)	(1x15)	१५

प्रश्नों की कुल संख्या २५ कुल अंक ८०

विज्ञान में प्रयोगात्मक निर्धारण के लिए पाठ्यक्रम
द्वितीय सत्र (अक्टूबर २००६-मार्च २०१०)

लिखित निर्धारण (पैन-पेपर परीक्षा) लिखित परीक्षा	अंकों का भारांक ४०	मार्च २०१० में आयोजित

योगात्मक निर्धारण के लिए विषय सूची

क्रम सं०	अध्याय का नाम
१.	क्या हमारे आस पास के पदार्थ शुद्ध हैं
२.	परमाणु और अणु
३.	परमाणु की संरचना
४.	जीवन की आधारभूत इकाई
५.	ऊतक
६.	गुरूत्वाकर्षण
७.	ध्वनि
८.	कार्य और ऊर्जा
६.	हम बीमार क्यों पडते हैं
१०.	खाद्य संसाधनों में सुधार

वहाँ दो रचनात्मक निर्धारण और एक योगात्मक निर्धारण होगा।

रचनात्मक निर्धारण	अंकों का भारांक	प्रस्तावित अवधि
रचनात्मक निर्धारण ३	१०	अक्टू. ०९-दिस.०९
रचनात्मक निर्धारण ४	१०	दिस.०९-फर.१०

द्वितीय सत्र (अक्टूबर २००९-मार्च २०१०) के लिए रचनात्मक निर्धारण
कक्षा ९वीं -विज्ञान

रचनात्मक निर्धारण ३ एवं ४ में निम्नलिखित शामिल होंगे-

I. सिद्धांत पर आधारित लिखित निर्धारण
II. सीबीएसई पाठ्यचर्या २००९-२०११ पर आधारित प्रयोगात्मक निर्धारण
III. निम्नलिखित प्रस्तावित क्षेत्रों में सतत निर्धारण

क. गृह दत्तकार्य/कक्षा दत्तकार्य
ख. कक्षा प्रतिक्रिया/मौखिक निर्धारण
ग. सेमिनार
घ. संगोष्ठी
ड. समूह चर्चा
च. ४-५ छात्रों के समूहों में समूह कार्यकलाप। प्रस्तावित क्षेत्र
  -अन्वेषणात्मक /प्रयोगात्मक प्रोजेक्ट
  -कार्य योजना
  -सर्वेक्षण
  -फील्ड दौरे पर आधारित कार्यपत्रक संबंधी निर्धारण

परिशिष्ट -४

परीक्षा संरचना : कक्षा ९वीं- गणित
द्वितीय सत्र (अक्टूबर २००९-मार्च २०१०)

योगात्मक निर्धारण-२ के लिए प्रश्न पत्र का डिजाइन

प्रश्नों के प्रकार	प्रश्नों की सं०	आबंटित अंक	योग
I बहु विकल्पात्मक प्रश्न	०८,	०१,	०८
.(एम सी क्यू)	०४	०२	०८=१६
II .लघु उत्तर टाईप १	०७	०२	१४
III.लघु उत्तर टाईप २	१०	०३	३०
IV.दीर्घ उत्तर टाईप	०५	०४	२०
योग	३४		८०

योगात्मक निर्धारण-२ के लिए पाठयक्रम : गणित
द्वितीय सत्र (अक्टूबर २००९-मार्च २०१०)

१. संख्या प्रणाली
२. बहुपद
३. रेखाएं और कोण
४. त्रिभुज
५. चतुर्भुज
६. समांतरचतुर्भुज तथा त्रिभुज का क्षेत्रफल
७. वृत
८. सतह क्षेत्रफल और परिमाण
९. सांख्यिकी

रचनात्मक निर्धारण द्वितीय सत्र (अक्टूबर २००९-मार्च २०१०)

दो रचनात्मक परीक्षाएं और एक वर्षांत योगात्मक परीक्षा होंगी।
भारांक तथा समय सारणी इस प्रकार होगी-

परीक्षा का प्रकार	भारांक	समय सारणी
रचनात्मक ३	१० अंक	अक्टूबर - दिस. २००९
रचनात्मक ४	१० अंक	जन. - फर. २०१०
योगात्मक	४० अंक	मार्च २०१०
योग	६० अंक	

रचनात्मक निर्धारण में निम्नलिखित सम्मिलित होंगें :

I . संबंधित अवधियों के दौरान पढ़ाई गई विषय सूची आधारित इकाई परीक्षा
II . लिखित परीक्षा/मौखिक परीक्षा
III . गृहकार्य/कक्षा कार्य
IV. कार्यसीट/दत्त कार्य
V. क्विज (प्रश्नोत्तरी)
VI . सामूहिक कार्यकलाप/चर्चा
VII. ३ से ४ छात्रों के समूहों में गणित प्रोजेक्ट। यह निम्नलिखित में से किसी एक रूप में प्रस्तुत किया जाए।
   क. लिखित प्रोजेक्ट रिपोर्ट
   ख. चार्ट/माडल
   ग. पावर प्वाइंट प्रस्तुती
   घ. सर्वेक्षण विश्लेषण आदि

८. सीबीएसई प्रयोगशाला एक्टीविटी मैनुअल में सूचीबद्ध गणित कार्यकलाप प्रयोगात्मक छात्रों का निम्नलिखित आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा ।

क. कार्यकलाप का निष्पादन
ख. निष्पादित कार्यकलाप का फाईल रिकार्ड
ग. मौखिक

सामाजिक विज्ञान के लिए परीक्षा संरचना - कक्षा ९वीं
द्वितीय सत्र (अक्टूबर २००९-मार्च २०१०)

अधिकतम अंक-८० | अवधि -३ घंटे

१. प्रश्नों के रूपों के लिए भारांकः

प्रश्नों का रूप	प्रत्येक प्रश्न के लिए अंक	प्रश्नों की सं०	कुल अंक
बहु विकल्पात्मक प्रश्न (एम सी क्यू)	१	१६	१६
लघु उत्तर -(एस ए)	३	१६	४८
दीर्घ उत्तर -(एल ए)	४	०३	१२
मानचित्र प्रश्न	४	०१	०४
योग		३६	८०

२. प्रश्नों का यूनिटवार विभाजनः

यूनिट संख्या तथा शीर्षक/ विषय	अंक	१ अंकीय प्रश्न	३ अंकीय प्रश्न	४ अंकीय प्रश्न	मानचित्र प्रश्न	योग
		प्रश्नों की सं.	प्रश्नों की सं.	प्रश्नों की सं.	प्रश्नों की सं.	
i.भारत एवं समकालीन विश्व इतिहास	१८	२	४	१	-	१८ (७)
ii .भारत भूमि और लोग (भूगोल)	२०	४	४	-	१	२० (९)
iii.लोकतांत्रिक राजनीति (राजनीति शास्त्र)	१८	५	३	१	-	१८ (९)
iv.उदान अर्थ-शास्त्र	१६	३	३	१	-	१६ (७)
v.आपदा प्रबंधन	८	२	२	-	-	८ (४)
योग	८०	१६	१६	३	१	८० (३६)

नोट -कोष्ठकों के अंदर के अंक प्रश्नों की संख्या को दर्शातें हैं और कोष्ठकों के बाहर उनके कुल अंकों को दर्शाते हैं।

३. विकल्पों की योजना - आंतरिक विकल्प केवल मानचित्र प्रश्न में उपलब्ध कराई जाती है।

सामाजिक विज्ञान के लिए पाठ्यक्रम : कक्षा ९वीं
द्वितीय सत्र
(अक्टूबर २००९-मार्च २०१०)

कृपया ध्यान दें कि वर्तमान शैक्षणिक सत्र के दौरान निर्धारित सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को पूरा किया जाना है और रचनात्मक तथा योगात्मक विधि में परीक्षा ली जानी है। २०१० में द्वितीय सत्र
योगात्मक परीक्षा के लिए नीचे लघुकृत पाठ्यक्रम दिया गया है।

<u>यूनिट । (इतिहास) भारत और समकालीन विश्व</u>

भाग । : <u>घटनाएं और कार्यवाहियां (निम्नलिखित में से कोई एक)</u>

१. फ्रांस की क्रांति
२. यूरोप में समाजवाद और रूसी क्रांति
३. नाजीवाद और हिटलर का उत्थान

भाग ।। : <u>जीविकाएं, अर्थव्यवस्थाएं तथा समाज (निम्नलिखित में से कोई एक)</u>

४. वन समाज और उपनिवेशवाद
५. आधुनिक विश्व में ग्राम्य कवि
६. किसान और खेतिहर

भाग ।।। : <u>दैनिक जीवन, संस्कृति तथा राजनीति</u>

७. इतिहास एवं खेलकूद : क्रिकेट की कहानी
८. वस्त्रः एक सामाजिक इतिहास

<u>यूनिट ।। (भूगोल) समकालीन भारत</u>

अध्याय ३ - जल निकास
अध्याय ४ - जलवायु
अध्याय ५ - प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीवन
अध्याय ६ - जनसंख्या

मानचित्र कार्य - उपलब्ध कराई गई मदों के अनुसार उपर्युक्त अध्यायों पर आधारित

<u>यूनिट ।।। (राजनीति शास्त्र) लोकतांत्रिक राजनीति</u>

अध्याय ३ - संवैधानिक डिजाइन
अध्याय ४ - निर्वाचक राजनीति
अध्याय ५ - संस्थाओं की कार्यप्रणाली
अध्याय ६ - लोकतांत्रिक अधिकार

<u>यूनिट IV - अर्थशास्त्र</u>

अध्याय २ - लोग संसाधन के रूप में
अध्याय ३ - गरीबी चुनौति के रूप में
अध्याय ४ - भारत में खाद्य सुरक्षा

<u>यूनिट V - (आपदा प्रबंधन) - एक साथ, सुरक्षित भारत की ओर-।।</u>

अध्याय २ - विशिष्ट संकट और मंदी
अध्याय ३ - सामान्य मानव उत्पन्न आपदाओं की रोकथाम

<u>मानचित्र मदों की सूची (भूगोल)</u>
भारत के राजनैतिक रूपरेखा मानचित्र के बारे में (दोनों पहचान एवं स्थान निर्धारण और लेबल लगाने के लिए)

अध्याय ३ - (जल निकास)
<u>नदियां</u> - गंगा, सतलुज, ब्रह्मपुत्र, नर्मदा, तापी, महानदी, गोमती, कृष्णा तथा कावेरी

<u>झीलें</u> - चिल्का, पुलिकट, वेम्बानद , साम्बर

<u>पर्वत श्रृंखलाएं</u> - काराकोरम, जास्कर, शिवालिक, अरावली, विध्यां, सतपुडा, पश्चिमी घाट पूर्वीघाट

<u>पर्वत चोटियां</u> - के२, कन्चनजंगा, एनेमुडी

<u>तटीय पट्टियॉं</u> - कोरोमण्डल कोकंन

<u>अध्याय ४ : (जलवायु)</u>

<u>शहर</u>ः त्रिवेन्द्रम, चैन्नई, जोधपुर, जयपुर, बंगलौर, मुम्बई, कोलकाता, लेह, शिलांग, दिल्ली, नागपुर,

४०० सेमी. से अधिक वर्षा वाले क्षेत्र
२० सेमी से कम वर्षा वाले क्षेत्र

<u>अध्याय ५ - (प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्य जीवन)</u>

<u>क्षेत्र</u> : सदाबहार वन, उष्ण कटिबंधी कंटीले वन, पर्वतीय वन, अमराई वन

<u>राष्ट्रीय पार्क</u>- कोरबेट, काजीरंगा, रणथम्बौर, शिवपुरी, कान्हा, किस्ली, सिमलीपल, मनस

<u>पक्षी विहार</u>- भरतपुर और रंगनाथिट्टों

<u>वन्य जीवन विहार</u> - सरिस्का, मुदुमलई, राजानी, दाचीगम

<u>अध्याय ६- जनसंख्या</u>

- उच्चतम जनसंख्या घनत्व वाले राज्य
- निम्नतम जनसंख्या घनत्व वाले राज्य
- उच्चतम लिंग अनुपात वाले राज्य
- निम्नतम लिंग अनुपात वाले राज्य
- भारत के अत्यधिक घनी आबादी वाले राज्य
- भारत के निम्नतम घनी आबादी वाले राज्य

सामाजिक विज्ञान में रचनात्मक निर्धारण
द्वितीय सत्र (अक्टूबर २००९ - मार्च २०१०)

क. <u>रचनात्मक निर्धारण</u>

सामाजिक विज्ञान में बोर्ड पहले ही कक्षा ९वीं के लिए आंतरिक निर्धारण के लिए निम्नलिखित ब्यौरे अनुसार २० अंक निर्धारित कर चुका है।

भाग १ कक्षा परीक्षाएं, यूनिट परीक्षाएं		१० अंक
भाग २ दत्त कार्य		५ अंक
भाग ३ प्रोजेक्ट कार्य		५ अंक
	कुल	२० अंक

द्वितीय सत्र के रचनात्मक निर्धारण में रचनात्मक निर्धारण ३ (एफ ए ३) तथा रचनात्मक निर्धारण ४ (एफ ए ४) के लिए उपर्युक्त को शामिल किया जा सकता है।

रचनात्मक निर्धारण के लिए भिन्न-भिन्न घटकों के संबंध में मार्गदर्शन

१. दत्त कार्य

छात्रों में निम्नलिखित कार्य शक्तियां विकसित करने का प्रयास ही दत्त कार्य है :

क) सामाजिक विज्ञान विषय की अच्छी समझ जैसा कि एक समाज विज्ञानी को होनी चाहिए।
ख) हमारे आस पास की दुनियां के संदर्भ में अर्जित भिन्न भिन्न विचारों को प्रयोग में लाना।
ग) वैज्ञानिक सूचना संसाधन कौशल विकसित करना जैसे- सर्वेक्षण, साहित्य अध्ययन, डाटा संग्रहण, व्याख्या और कारण प्रस्तुत करना तथा विकल्प सुझाना।
घ). विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान के अध्ययन को संबद्ध करना।

दत्त कार्य उन क्षेत्रों के संबंध में हो सकता है जिनका इकाई परीक्षाओं अथवा योगात्मक परीक्षाओं में परीक्षण नहीं किया जा सकेगा क्योंकि ये ऐसे विकल्प है जिन पर बोर्ड द्वारा विचार किया जा रहा है, किंतु ये विशेषतया इतिहास के पाठयचर्या तथा पाठ्यक्रम का एक भाग है। इस प्रकार दत्त कार्य का उद्देश्य निम्नलिखित में सक्षम होना हैः

१. पाठ्यवस्तु की व्याख्या और मत प्रस्तुत करना,

उदाहरण -

क) उपनिवेशी तथा समकालीन अवधि में दिल्ली की तस्वीर और इसके अभिविन्यास की व्याख्या करना।
ख) परम्परागत सिंचाई प्रणालियों के भिन्न-भिन्न प्रकारों का अध्ययन करना और उन्हें उस वातावरण से संबद्ध करना जहां वे पाई जाती है।
ग). ईस्ट इंडिया कम्पनी से आज तक भारत में मुद्रा विकासक्रम का अनुरेखण करना।

२. इंटरनेट एवं सीडी, विश्वकोश जैसे अन्य सूचना के साधनों से अथवा पुस्तकालय में अन्य मूलपाठ के विस्तृत पठन से साथ मूलपाठ विषयक सूचना संबद्ध करना।

उदाहरण -

क) राजनीति शास्त्र और अर्थशास्त्र की शब्दावली का शब्दकोश बनाना।
ख) उपनिवेश स्थिति के मुददों के बारे में भारत में भिन्न-भिन्न उदारवादियों और उग्रवादियों के उद्धरण और जीवनी।
ग) इतिहास के पुनर्निर्माण हेतु अभिलेखों का प्रयोग
घ) खनिज सम्पति, जनसंख्या, भूमि का उपयोग, नगरों इत्यादि के बारे में भारत का व्याख्या सहित एटलस बनाना।

३. उनकी इतिहास, सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन और भूगोल की समझ गहरी करने हेतु समाचारों, कार्टूनों, तस्वीरों एवं कथा साहित्य और यात्रा विवरणों का प्रयोग करना।

उदाहरण -

क) भारत के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों को समझने के लिए समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं से यात्रा लेखन का प्रयोग करना।

ख) भारत एक खोज अथवा लोकतंत्र पर किसी पुस्तक की एक समीक्षा तैयार करना। यात्रा विवरण अथवा ऐतिहासिक उपन्यास जैसे नीलदर्पण अथवा गोदान।

४. कक्षा पाठ का विस्तारण -

शिक्षण के दौरान अधिकांश मामलों में पाठ का अंत एक दत्तकार्य के साथ होता है जो पाठ के एक विस्तारण का भाव है। यह पाठ अध्यापक के निर्देशानुसार छात्रों को उनके अवकाश समय में घर पर पूरा किया जाना है। इस प्रकार यह अतिरिक्त अधिगम अनुभव प्रदान करता है जो एक संक्षिप्त कक्षा सत्र में संभव नहीं है । यह कक्षा में किए गए कार्य का अतिरिक्त अभ्यास और नई परिस्थितियों में प्रासंगिकता प्रदान करने के साथ ज्ञान की समृद्धि और अवधारणा की प्रकृति को स्पष्ट करता है।

उदाहरण -

क) अनुभव आधारित दत्तकार्य जैसे मौसम डाटा प्रदर्शन ।
ख) वन्य संरक्षण नीतियों को सूत्रबद्ध करने हेतु सरकार द्वारा प्रथम जनजातियों की शामिल करने की आवश्यकता
ग) स्टालिन द्वारा प्रस्तावित अनुसार कृषि के समूहन के बारे में छात्रों के विचार
घ) आज प्रत्येक घर द्वारा चरखा कातने की महात्मा गांधी के विचारों की संगतता
च) लोक सभा और राज्यसभा का तुलनात्मक अध्ययन।

५. आत्म-मूल्यांकन

जब कक्षा में पहले ही पढ़ाये गए विषयों के अनुप्रयोग के बारे में अध्यापक द्वारा कोई गृह कार्य दिया जाता है तो यह छात्रों द्वारा आत्म-मूल्यांकन के लिए स्थिति प्रदान करता है कि वे विद्यालय में पढाई गई नई अवधारणा को कितना सही समझते हैं। ये प्रश्न मूलपाठ आधारित और समीक्षा के रूप में दिए गए हो सकते हैं।

उदाहरण -

क) भारत में कृषि अथवा उर्जा विकास, जलवायु परिवर्तन और विकाससील देश, पहले से अब तक क्रिकेट खेल में बदलावों के बारे में संक्षिप्त निबंध लिखना।
ख) नागरिकता पर छात्रों की टीका।
ग) फ्रांस के क्रांतिकारियों और नाजीवाद के अनुयायियों द्वारा नागरिकता की परिभाषा
घ) संविधान की आवश्यकता

६. विशिष्ट विषयों का विस्तृत अध्ययन।

अधिकांश मामलों में छात्रों को दिए जाने वाले दत्तकार्य एक विशिष्ट विषय से संबंधित होते हैं जहां छात्रों से विषय के महत्वपूर्ण पहलु के बारे में रिपोर्ट लिखने के लिए कहा जाता है इसके लिए विषय से संबंधित टिप्पणियों और व्यक्तिगत अनुभवों संगत ज्ञान के संश्लेषण सगत संदर्भो के अध्ययन की आवश्यकता है। छात्रों से सभी संबंधित सूचना को एक क्रम में संगठित करने की आशा की जाती है।

उदारण -

क) भिन्न-भिन्न विषयों के बारे में एक प्रश्नोतरी, पोस्टर, संसाधन किट, पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण, खेलकूद वर्ग पहेली तैयार करना।
ख) मानव शरीर पर अफीम के हानिकारक प्रभावों के बारे में एक पोस्टर डिजाइन करना।
ग) चुनाव आयोग द्वारा निर्धारित आदर्श आचरण संहिता का अध्ययन करना।
घ) चुनावों के दौरान भिन्न भिन्न राजनीतिक पार्टियों द्वारा विभिन्न मुददों पर प्रयोग किए गए नारों के बारे में चार्ट
ड) अन्य देशों के संविधानों को देखते हुए भारतीय संविधान के विकास की रूपरेखा प्रस्तुत करना।

२. प्रोजेक्ट कार्य -

कभी-कभी प्रोजेक्ट कुछ सामग्री के संग्रहण के मापन कुछ प्रेक्षणों पर आधारित होते हैं। बाद में इसे व्यवस्थित अथवा सारणीबद्ध करना और पता लगाना कि कोई पैटर्न विद्यमान है। इसमें छात्रों से डाटा अथवा सूचना का प्रस्तुतीकरण, इसका विश्लेषण और दत्तकार्य के महत्वपूर्ण निष्कर्षों का अनुसरण करके कार्य-पद्धति प्रस्तुत करने के लिए कहना।

यह भी सुझाव दिया जाता है कि छात्र अथवा छात्रों के समूह द्वारा तैयार रिपोर्ट छात्रों द्वारा पूरे विद्यालय अथवा कक्षा के सामने प्रस्तुत की जाती है। चर्चाएं अयोजित की जानी हैं। अध्यापक तथा अन्य छात्र प्रोजेक्ट पर आधारित प्रश्न पूछ सकते हैं। जब भी छात्रों को उत्तर देने में कुछ समस्या हो तो अध्यापक उदाहरण सहित स्पष्ट करते हैं और वर्णन करते है।

कक्षा ९वीं एवं १०वीं के लिए सामाजिक विज्ञान में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा डिजाइन किए गए प्रोजेक्ट विषयों का ब्योरा देने और अच्छी तरह फोकस करने की आवश्यकता है ताकि बच्चे उसे आसानी से समझ सकें। प्रोजेक्ट सभी प्रकार के छात्रों और

सभी प्रकार के वातावरण में करना आसान होना चाहिए। डाटा संग्रहण और पूछताछ पर व्यतीत समय बोझ नहीं होना चाहिए अथवा विद्यालय समय के दौरान नहीं किया जाना चाहिए।

उदाहरण -

क) अपने क्षेत्र के विधायक का उसके कार्यकाल के दौरान उसके निर्वाचन क्षेत्र में हुई प्रगति के बारे में साक्षात्कार लेना ।
ख) विभिन्न वर्गो एवं व्यवसाय से संबंधित पडोस के लोगों का साक्षात्कार लेना कि लोग उनके विधायक के प्रदर्शन से कितने संतुष्ट हैं।
ग) भारत में विशेष आर्थिक जोन की भूमिका।
घ) जिम्मेदार भारतीय होने पर गर्व करना -मौलिक कर्तव्य हेतु जागरूकता के बारे में एक प्रोजेक्ट
च) भारत में खेल कूद प्रतिभाओं को बढावा देना।

दत्तकार्य और प्रोजेक्ट कार्य का मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण पहलु है। जब एक दत्तकार्य दिया जाता है तो इसमें अनुदेशन उददेश्यों के संबंध में कुछ आधार होना चाहिए। दत्तकार्य का मूल्यांकन उन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए कि उद्देश्यों की प्राप्ति की सीमा को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए। दत्तकार्य का मूल्यांकन किया जाना चाहिए और ग्रेड देनी चाहिए। दत्तकार्य ग्रेड भी अंतिम निर्धारण में शामिल किए जाने चाहिए। यह भी ध्यान दिया जाए कि दत्तकार्य हमेशा रूचिकर नही बनाया जा सकता है किंतु उन्हें हमेशा अर्थपूर्ण बनाया जा सकता है।

३. परीक्षा-

एक परीक्षा छात्र को उनकी उपलब्ध्यिां तथा क्षमताओं को सिद्ध करने के लिए दिए गए प्रश्न अथवा परिस्थिति का निष्पादन करने हेतु एक परिस्थिति अथवा परिस्थितियों की श्रेणी प्रदान करती है। हम शैक्षिक में उनकी उपलब्धि की परीक्षा कर सकते हैं। ऐसी परीक्षा अध्यापक निर्मित परीक्षा होती है। हम अनेक प्रकार की परीक्षाओं जैसे यूनिट परीक्षा, नैदानिक परीक्षा, मौखिक परीक्षा, वार्षिक परीक्षा का प्रयोग करते हैं। अनेकबार प्रश्न होता है कि हम कैसे जान सकते हैं कि बच्चों ने किसी तरह कुछ सीखा हैं अथवा उसने जो कुछ सीखा है वह सही है अथवा अधिक प्रबलीकरण की आवश्यकता हैं, इसके लिए परीक्षा के माध्यम से उसके अधिगम का परिणाम निकालने में हमें सक्षम होना है। यह नियतकालिक परीक्षाओं की सहायता से हो सकता है।

जब एक अध्यापक निर्धारित करना चाहता है कि क्या छात्रों को एक पाठ में अथवा एक यूनिट में जो पढ़ाया गया है उन्होंने सीख लिया है और किन कठिनाईयों का अभी भी सामना करते हैं, नियतकालिक अथवा यूनिट परीक्षाएं सर्वोत्तम उपयोग है। जब प्रत्येक विषय अथवा यूनिटों के बाद आवधिक परीक्षाएं आयोजित की जाती है, अध्यापकों को एक स्पष्ट तस्वीर प्राप्त होती है कि शिष्य का क्या स्तर है और वह प्रगति कर रहा/रही है। एक शिष्य की कमजोरी तथा सामर्थ्य का ज्ञान अध्यापकों द्वारा प्रभावी शिक्षण और शिष्यों द्वारा प्रभावी अधिगम की योजना बनाने में सहायक है। आवधिक परीक्षा द्वारा सतत् मूल्यांकन किया जाता है।

कभी-कभी जब प्राधिकारी छात्रों की प्रगति अभिभावकों को बताने पर जोर देते हैं तब विशेष रूप से उल्लिखित अंतरालों पर आवधिक परीक्षाएं यंत्रवत आयोजित की जाती हैं ताकि अभिभावकों को परीक्षा परिणाम सूचित करने की औपचारिकता पूरी की जा सके । ऐसे मामले में छात्रों का व्यवहार परिवर्तन की बजाय परीक्षा लिखने की दिशा में कक्षा गतिविधियों को निर्देशित करने की संभावना उत्पन्न हो सकती है । केवलमात्र परीक्षण के लिए शिक्षण के ऐसे अभ्यासों को हतोत्साहित करना चाहिए। सामान्यतः बच्चे को यह समझना चाहिए कि मूल्यांकन के परिणामों का कैसे उपयोग किया जाए । यदि वह नहीं जानती/जानता है तो वह मूल्यांकन के अन्य रूपों तथा परीक्षाओं का एक प्रकार का डर अथवा चिंता विकसित कर सकता है।

आवधिक परीक्षाओं के निष्पादन को व्यवस्थित रूप से दर्ज करना चाहिए। यह अच्छा होगा यदि दोनों गुणात्मक तथा मात्रात्मक फीडबैक छात्र को दी जाती है और गलतियों की शुद्धता पर बल दिया जाता है । व्यक्तिगत निष्पादन में सुधार के अवसर के बाद अंतिम निर्धारण के लिए इन यूनिट परीक्षाओं को वार्षिक परीक्षा निष्पादन के साथ देय श्रेय देना चाहिए। तथापि उनकी रचनात्मक भूमिका को नहीं भूलना चाहिए।

ख. <u>योगात्मक निर्धारण : मार्च २०१०</u>

चाहे अध्ययन के किसी भी क्षेत्र के बारे मे पर्याप्त ज्ञान हो, उसका आमतौर पर सत्र के अंत में योगात्मक परीक्षा आयोजित करके पता लगाया जाता है । यह परीक्षा पूरे कोर्स के प्रतिदर्श को तय करती है और कठिन तथा आसान प्रश्नों में विभाजित होती है। परीक्षा २० प्रतिशत उच्च श्रेणी चिंतन कौशल प्रश्नों तथा ४० प्रतिशत समझ आधारित प्रश्नों की हो सकती है। प्रश्न मानचित्रों, आरेखों आदि की व्याख्या के बारे में और तथ्यात्मक स्मरण प्रकार के हो सकते हैं। परीक्षा एक सकारात्मक विवेक सूचक होगी और परिणामों का उपयोग पदक्रम श्रेणी प्रदान करने, छात्रवृति और पदोन्नति देने और मार्गदर्शन के लिए किया जाता है। चूंकि योगात्मक परीक्षा का आयोजन सत्र के अंत में किया जाता है, इस परीक्षा के परिणाम छात्रों द्वारा अधिगम के सुधार हेतु अथवा कक्षा शिक्षण का प्रभावी नियोजन करने के लिए लाभप्रद नहीं हैं।

<u>योगात्मक परीक्षा का फार्मेट</u> -

- योगात्मक निर्धारण/अंतिम परीक्षा ८० अंकों में से होगी जो ४० अंकों तक घटाई जा सकती है।
- यह निर्धारण सीसीई में कुल अंकों का ४० प्रतिशत का होगा।
- अंकों का यूनिटवार भारांक माध्यमिक विद्यालय पाठ्यचर्या २०१० में सामाजिक विज्ञान के पाठयक्रम में निर्धारित अनुसार वही रहेगा।
- यूनिटवार प्रश्नों का विभाजन और डिजाइन दिया जाता है।
- मार्च २०१० के योगात्मक निर्धारण में निर्धारित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन सी ई आर टी) पाठयपुस्तकों के उन अध्यायों का ब्यौरा दिया गया है जिनमें परीक्षा ली जाती है।
- प्रश्न पत्र में ३६ प्रश्न होंगे जिसमें मानचित्र कार्य के लिए मदों की विनिर्दिष्ट सूची के आधार पर ४ अंकों का एक मानचित्र प्रश्न भी शामिल होगा।
- सामाजिक विज्ञान प्रश्न पत्र में पहलीबार बहुविकल्पीय प्रश्न शामिल किए जाने है।
- सामाजिक विज्ञान में सभी ५ यूनिटों से १६ बहु विकल्पात्मक प्रश्न (एम सी क्यू) होंगे।
- बहु विकल्पात्मक प्रश्न (एम सी क्यू) का एक अलग से पेपर होगा जो प्रथम ३० मिनट में पूरा किया जाना है। उत्तर पुस्तिकाएं ३० मिनट की अवधि पूरी होने के बाद लेनी है।
- बहु विकल्पात्मक प्रश्न (एम सी क्यू) पेपर के तत्काल बाद छात्रों को मुख्य पेपर का उत्तर देने के लिए २ धंटे ३० मिनट दिए जाएगें।

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

शिक्षा सदन, १७, इंस्टिट्यूशनल एरिया, राउज एवेन्यू, नई दिल्ली-११०००२

दिनांक : २१.१२.२००६
परिपत्र सं. ५०

सीबीएसई के संबद्ध
स्वतंत्र विद्यालयों के सभी प्रधानाचार्य

विषय : अभिव्यक्ति परीक्षण, द्वितीय अवधि - (अक्तूबर २००६ - मार्च २०१०) के लिए कक्षा IX अंग्रेजी (अभिव्यक्ति और भाषा तथा साहित्य) का नमूना प्रश्न-पत्र।

प्रिय प्रधानाचार्य,

दूसरी अवधि (अक्तूबर २००६-मार्च २०१०) के लिए कक्षा IX में परीक्षा में सुधार तथा सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के बारे में हमारे परिपत्र संख्या ४२, दिनांक १२.१०.२००६ के क्रम में, सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन स्कीम के अनुसार परिवर्तनों को प्रदर्शित करते हुए, **नमूना प्रश्न-पत्र, अंग्रेजी (अभिव्यक्ति तथा भाषा और साहित्य) के लिए भी तैयार कर दिए गए हैं (अनुबंध १क और १ख)।**

कक्षा IX अंग्रेजी (अभिव्यक्ति तथा भाषा और साहित्य) के नमूना प्रश्न-पत्र नीचे दिए जा रहे हैंः

अंग्रेजी (अभिव्यक्ति) कक्षा IX कक्षा - कोड सं.(१०१) २००६-२०१०

यह प्रश्न पत्र **८० अंकों** का होगा (ताकि पाठ्यविवरण को व्यापक रूप से शामिल किया जा सके)।

इसके चार खंड होंगेः

खंड क	**पाठ बोधन**	**:**	**२० अंक**
खंड ख	**लेखन :**	**:**	**२० अंक**
खंड ग	**व्याकरण :**		**२० अंक**
खंड घ	**पाठ्यपुस्तक/ साहित्य**	**:**	**२० अंक**

खंड क

इस खंड का मूल्यांकन बोधन के आधार पर किया जाएगा। यह खंड २० अंकों का होगा और इसमें चार पठन पद्यांश/ गद्यांश होंगे (प्रश्न १-४)। प्रत्येक प्रश्न ५ अंकों का होगा और प्रत्युक १ अंक के ५ उप भाग होंगे। सभी प्रश्नों के बहु-विकल्प प्रश्न होंगे। यह गद्यांश/ पद्यांश कविताओं/ तथ्यपरक/विवरणात्मक/ साहित्यिक/ तर्कमूलक के अंश होंगे। इन प्रश्नों में अनुमान, मूल्यांकन, बोध और शब्दावली का परीक्षण किया जाएगा। प्रत्येक पाठन अंश में १२०-१७५ शब्द होंगे। यदि कविता के उद्धरण हों तो शब्दों में घट-बढ़ हो सकती है लेकिन ये चार अंश ४८०-७०० शब्दों के होंगे। शब्दावली कौशल का मूल्यांकन करने के लिए कम से कम ०४ अंक होंगे।

खंड ख

इस खंड में लेखन कौशल का मूल्यांकन किया जाएगा और इसमें **२० अंकों** के **३ प्रश्न** होंग।

प्रश्न ५ : यह **८० शब्दों** तक का लघु उत्तर प्रश्न होगा और **४ अंक** जीवनी संबंधी रेखाचित्र (किसी व्यक्ति के जीवन और उपलब्धियों पर टिप्पणियों का विस्तार एक छोटे परिच्छेद में करना) आंकड़ों का निर्वचन या संवाद पूरा करने के रूप में होंगे। इस प्रश्न का मूल्यांकन विद्यार्थी द्वारा स्पष्ट और व्याकरण की दृष्टि से सही अंग्रेजी में **विचारों के अभिव्यक्ति की दृष्टि** से किया जाएगा, जिसमें विचारों को सुसंगत और संक्षिप्त रूप में स्पष्ट विवरण लिखकर, घटनाओं का सही विवरण देकर, टिप्पणियों का विस्तार एक लेख के रूप में करके या एक रूप से दूसरे रूप में सूचनाओं को परिवर्तित करके किया गया हो।

प्रश्न ६ : यह लंबे उत्तर वाला **८ अंकों** का प्रश्न होगा और इसमें औपचारिक पत्र/ अनौपचारिक पत्र या ई-मेल के रूप में कम से कम **१२० शब्द** होंगे। इसमें एक लंबा लेख लिखा जाएगा और इसका मूल्यांकन समुचित शैली, भाषा और रूप के प्रयोग की दृष्टि से किया जाएगा।

प्रश्न ७ : यह लंबे उत्तर वाला **८ अंकों** का प्रश्न होगा और यह **डायरी में प्रविष्टि, लेख, भाषण, कहानी लेखन** के रूप में होगा (जिसका आरंभ और अंत दिया जाएगा) जिसमें कम से कम **१५० शब्द** होंगे। इससे विद्यार्थियों के स्पष्ट और व्याकरण की दृष्टि से सही अंग्रेजी में विचारों की अभिव्यक्ति और विषय प्रवेश विकास और उपसंहार द्वारा विचारों को सुसंगत तरीके से योजनाबद्ध व्यवस्थित और प्रस्तुतीकरण विचारों में समानता और भिन्नता और समर्थनकारी उदाहरणों के माध्यम से निष्कर्ष पर पहुंचने और तर्क प्रस्तुत करने, समुचित शैली और रूप का प्रयोग करने और टिप्पणियों को बड़े निबंध के रूप में विस्तारित करने और विचारों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति का मूल्यांकन किया जाएगा।

खंड ग

इस खंड में **व्याकरण** के बिंदुओं का मूल्यांकन किया जाएगा, जिसके लिए **२० अंक** होंगे। इस खंड में पांच प्रश्न हो सकते हैं। कुछ प्रश्नों के भाग भी हो सकते हैं।

प्रश्न ८-प्रश्न १२ : इसमें व्याकरण के ऐसे बिंदुओं का परीक्षण किया जाएगा, जो कक्षा IX में पढ़ाए गए हों। क्रिया के रूप, वाक्य संरचना, संयोजन, निश्चयात्मक, सर्वनाम, उपसर्ग, उप-वाक्य, आदि जैसे) विभिन्न संरचनाओं का मूल्यांकन करके परीक्षण किया जा सकता है। **जहां तक अभिव्यक्ति के मूल्यांकन का प्रश्न है, यह सीखी गई व्याकरण के बिंदुओं को कुछ समय बाद दोहराने की प्रक्रिया होगी और इसका परीक्षण बहु-विकल्प वाले प्रश्न के माध्यम से किया जाएगा।**

खंड घ

इस खंड का **साहित्यिक पाठों** की दृष्टि से मूल्यांकन किया जाएगा और इसके लिए **२० अंक** होंगे।

प्रश्न १३-प्रश्न १४ में बहुत विकल्प वाले प्रश्न होंगे, जो गद्य/पद्य का नाटक पर आधारित प्रसंग के संदर्भों के अनुसार होंगे, जिनमें से प्रत्येक **३ अंकों** के होंगे। इन प्रश्नों के माध्यम से कल्पना और मूल्यांकन का परीक्षण किया जाएगा।

प्रश्न १५ में चार लघु उत्तरीय (**लघु उत्तर प्रकार** के) प्रश्न होंगे, जो गद्य, पद्य और नाटक पर आधारित हों, जिनमें से प्रत्येक **२ अंकों** के होंगे। यह प्रश्न पुनरावृत्ति का परीक्षण करने के लिए नहीं होगा अपितु अनुमान और मूल्यांकन के लिए होगा।

प्रश्न १६ : यह लंबे उत्तर वाला प्रश्न होगा, जिसके लिए **६ अंक** होंगे और इसका उपयोग पाठ/ कविता/ कहानी या उद्धरणों से बाहर जाकर पाठ के व्यक्तिगत उत्तर का मूल्यांकन करने के लिए किया जाएगा। इसमें पाठ से बाहर और दो पाठों के बीच रचनात्मकता, कल्पनाशीलता और बहिर्निवेशन का भी मूल्यांकन किया जाएगा।

अंग्रेजी (भाष और अभिव्यक्ति) कक्षा IX - कोड सं.(१८४) २००९-२०१०

यह प्रश्न पत्र **८० अंकों** का होगा। यह चार खंडों में विभाजित होगाः

इसके चार खंड होंगेः

खंड क	**पाठ बोधन**	:	**१५ अंक**
खंड ख	**लेखन :**	:	**१५ अंक**
खंड ग	**व्याकरण :**		**१५ अंक**
खंड घ	**पाठ्यपुस्तक/ साहित्य**	:	**३५ अंक**

खंड क

इस खंड के माध्यम से पाठ बोधन का मूल्यांकन किया जाएगा **(१५ अंक)**

प्रश्न १-३ : यह **३ ऐसे अनदेखे अंशों** पर आधारित होगे, जिनमें कुल ५०० शब्द होंगे। इसके बाद प्रत्येक के संबंध में एक-एक अंक के बहुत-विकल्प प्रकार के प्रश्नों के लिए **१५ अंक** होंगे **३ अंक शब्दावली** के लिए होंगे। इस प्रश्न के माध्यम से पाठ बोधन, अनुमान और मूल्यांकन का परीक्षण किया जाएगा। ये अंश कविता/ तथ्यपरक/ साहित्यिक/ तर्कमूलक अंश होंगे।

खंड ख

इस खंड के माध्यम से लेखन कौशल का मूल्यांकन किया जाएगा **(१५ अंक)**

प्रश्न ४ : यह अधिक से अधिक **१०० शब्दों** का एक पत्र (औपचारिक/ अनौपचारिक/ ई-मेल) होगा, जो मौखिक बताई गई बातों पर आधारित होगा। इसके लिए **६ अंक** होंगे। इस प्रश्न का मूल्यांकन विद्यार्थी द्वारा स्पष्ट और व्याकरण की दृष्टि से सही अंग्रेजी में विचारों की ऐसी अभिव्यक्ति की दृष्टि से कियाजाएगा, जिसमें विचारों को सुसंगत और संक्षिपत रूप में स्पष्ट विवरण लिखकर, घटनाओं कासही विवरण देकर, टिप्पणियों का विस्तार एक लेख के रूप में करके या एक रूप से दूसरे रूप में सूचनाओं को परिवर्तितत करके किया जाएगा।

प्रश्न ५ : यह ऐसे लेख, भाषण या निबंध लिखने पर आधारित होगा, जो आंखों देखी या मौखिक रूप से बताई गई बातों पर आधारित होंगे। यह **६ अंकों (कम से कम १२० अंकों)** का होगा। इससे विद्यार्थियों के स्पष्ट और व्याकरण की दृष्टि से सही अंग्रेजी में विचारों की अभिव्यक्ति और विषय प्रवेश, विकास और उपसंहार द्वारा विचारों को सुसंगत तरीके से, योजनाबद्ध व्यवस्थित प्रस्तुतीकरण, विचारों में समानता और भिन्नता और समर्थनकारी उदाहरणों के माध्यम से निष्कर्ष पर पहुंचने और तर्क प्रस्तुत करने, समुचित शैली और रूप का प्रयोग करने और टिप्पणियों को बड़े निबंध के रूप में विस्तारित करने और विचारों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति का मूल्यांकन किया जाएगा।

प्रश्न ६ : इसमें **संवाद** को पूरा करने/ कहानी लिखने या रिपोर्ट लिखने के रूप में एक छोटा निबंध लिखना आवश्यक होगा। इसप्रश्न के लिए **५ अंक** होंगे और यह ६०-८० शब्दों का होगा।

खंड ग

इस खंड में **व्याकरण** के ज्ञान का मूल्यांकन किया जाएगा **(१५ अंक)**

प्रश्न ७-११ : यह खंड **१५ अंकों** का होगा और इसमें तीन-तीन अंकों के **५ प्रश्न** होंगे। इस प्रश्न के उप-भागों की संख्या में घट-बढ़ हो सकती है। सभी प्रश्न बहु-विकल्प प्रकार के प्रश्न होंगे। ये प्रश्न कक्षा IX में पढ़ाए गए व्याकरण के बिंदुओं के नमूने पर आधारित होंगे।

समूह घ

इस खंड में **साहित्यिक पाठ/ पाठ्पुस्तकों** के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

प्रश्न १२-१३ : ये सप्रसंग बहु-विकल्प प्रश्न होंगे, जो **"बीहाइव"** नामक पुस्तक से लिए गए उद्धरणों पर आधारित होंगे और प्रत्येक के लिए **५ अंक** होंगे।

प्रश्न १४ : यह लंबे उत्तर वाला प्रश्न होगा, जो **"बीहाइव"** नामक पुस्तक पर आधारित होगा और **५ अंक** का होगा। इसका उत्तर लगभग **८० शब्दों** में दिया जाएगा।

प्रश्न १५ : इसमें लघुत्तरात्मक प्रकार का प्रश्न होगा, जिसमें ३ में से **२ प्रश्नों** का उत्तर देना होगा और **दो-दो अंकों** के लिए **३०-४० शब्द** लिखने होंगे। यह प्रश्न **'बीहाइव'** नामक पुस्तक के गद्य पाठों पर आधारित होंगे।

प्रश्न १६ : यह सप्रसंग प्रश्न (बहु-विकल्प प्रश्न) होगा, जो **"बीहाइव"** नामक पुस्तक से लिए गए पद्यों के उद्धरणों पर आधारित होगा, जिनके लिए ४ अंक होंगे।

प्रश्न १७ : यह **३०-४० शब्दों** वाला लघुउत्तरात्मक प्रश्न होगा, जिसके लिए **२ अंक** होंगे। यह कविता खंड से लिए गए उद्धरणों पर आधारित होगा।

प्रश्न १८ : यह लघुउत्तरात्मक वाला प्रश्न होगा, जिसके लिए लगभग ८० शब्द लिखने होंगे और इसके लिए ५ अंक हैं। यह प्रश्न **"मोमेंट"** (सप्लीमेंटरी रीडर) के पाठ पर आधारित होगा।

प्रश्न १९ : यह लगभग ४०-५० **शब्दों** वाला लघुउत्तरात्मक प्रश्न होगा, जिसके लिए **३ अंक** होंगे।

प्रश्न २० : यह एक लघु उत्तरात्मक प्रश्न होगा, जिसका उत्तरात्मक **३०-४० शब्दों** में देना होगा। इसके लिए **२ अंक** होंगे।

प्रश्न १४, १५, १७, १८, १९ और २० के बीच आंतरिक विकल्प होंगे।

टिप्पणी : **यह प्रश्न पत्र दोनों अंग्रेजी (अभिव्यक्ति और भाषा तथा साहित्य) में ८० अंकों का होगा। ये अंक गणना के लिए ४० प्रतिशत तक घटाए जा सकते हैं। इसमें से २० अंक संवाद कौशल के लिए अलग रखे जाएंगे, जिसका मूलयांकन अभिव्यक्ति के मूल्यांकन के लिए किया जाएगा (एफ ३ और एफ ५)।**

कृपया इसे अंग्रेजी विषय पढ़ाने वाले और अंग्रेजी पढ़ने वाले सभी अध्यापकों और विद्यार्थियों के ध्यान में लाया जाए।

भवदीया,

(मीनाक्षी जैन)
सहायक शिक्षा अधिकारी

संलग्नक : अनुबंध १क और १ख

निदेशालयों/ केवीएस/ एनवीएस/ सीटीएसए के प्रमुखों को इस अनुरोध के साथ प्रतिलिपि प्रेषित कि वे अपने क्षेत्राधिकार के अंतर्गत सभी संबंधित स्कूलों में सूचना का प्रसार करें।

1. आयुक्त, केंद्रीय विद्यालय संगठन, १८-इंस्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-११००१६
2. आयुक्त, नवोदय विद्यालय समिति, ए-२८, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली।
3. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सरकार दिल्ली, पुराना सचिवालय, दिल्ली - ११००५४

4. सार्वजनिक अनुदेशन निदेशक (स्कूल), संघशासित क्षेत्र सचिवालय, सेक्टर-९, चंडीगढ़
5. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक, सिक्किम-७३७१०१
6. शिक्षा निदेशक, अरुणाचल प्रदेश सरकार, इटानगर-७९१११
7. शिक्षा निदेशक, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह सरकार, पोर्ट ब्लेयर-७४४१०१
8. सचिव, केंद्रीय तिब्बती स्कूल प्रशासन, ईएसएस ईएसएस प्लाजा, कम्युनिटी सेंटर, सेक्टर-३, रोहिणी, दिल्ली-११००८५
9. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय कार्यालयों को इस अनुरोध के साथ कि संबंधित क्षेत्रों के बोर्डों से संबद्ध स्कूलों को इस परिपत्र का परिचालन करें।
10. शैक्षणिक शाखा, सीबीएसई के शिक्षा अधिकारी/ सहायक शिक्षा अधिकारी।
11. संयुक्त सचिव (आईटी) को इस अनुरोध के साथ प्रेषित कि वे सीबीएसई की वेबसाइट पर प्रस्तुत करें।
12. पुस्तकालय औरसूचना अधिकारी, सीबीएसई
13. अध्यक्ष, सीबीएसई के शिक्षा अधिकारी।
14. सचिव, सीबीएसई के डीओ/वैयक्तिक सहायक
15. सीई, सीबीएसई के वैयक्तिक सहायक
16. निदेशक (शिक्षा) के वैयक्तिक सहायक
17. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के वैयक्तिक सहायक
18. विभागाध्यक्ष (एड्यूसेट) के वैयक्तिक सहायक
19. जन संपर्क अधिकारी, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

(मीनाक्षी जैन)

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन स्वायत्त संस्था
शिक्षा सदन, १७, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, राउज एवेन्यु, नई दिल्ली-११०००२

सीबीएसई/ई.ओ./परि०/२००६ दिनांकः ०६.११.२००६
परिपत्र सं० ५१

सीबीएसई से संबद्ध
सभी संस्थाओं के प्रमुख

प्रिय प्रधानाचार्य महोदय/महोदया,

द्वितीय सत्र (अक्तूबर २००६-मार्च २०१०) के लिए कक्षा ६वीं में सीसीई से संबंधित हमारे दिनांक १२.१०.२००६ के परिपत्र सं० ४२ के क्रम में गृह विज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी के आधार विषयों के लिए प्रश्न-पत्रों का पाठ्यक्रम एवं संरचना को कक्षा ६वीं की मार्च २०१० में सत्रांत परीक्षा में शामिल होने वाले छात्रों के लिए पाठ्यक्रम समिति सदस्यों तथा विषय विशेशज्ञों के साथ परामर्श के बाद अंतिम रूप दिया गया है। संरचना एवं पाठ्यक्रम परिशिश्ट-। एवं ।। दिया गया है।

इसे कक्षा ६वीं के लिए अध्यापन एवं शिक्षा अधिगम में शामिल सभी शिक्षकों एवं छात्रों के ध्यान में लाया जाए।

भवदीया,

(सी. गुरूमूर्ति)
निदेशक (शैक्षणिक)

प्रतिलिपि :- निदेशालयों/केवीएस/एनवीएस/सीटीएसए के प्रमुखों को इस अनुरोध के साथ प्रेषित है कि वे अपने अपने **अधिकार के अंर्तगत के सभी संबंधित विद्यालयों में सूचना का प्रसार करें :-**

१. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, १८, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली -११००१६ ।
२. निदेशक, नवोदय विद्यालय समिति, ए-२८, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली ।
३. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सरकार, पुराना सचिवालय, दिल्ली -११००५४
४. शिक्षा निदेशक, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह सरकार, पोर्ट ब्लेयर -७४४१०१
५. जन अनुदेशन निदेशक (विद्यालय), राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सचिवालय सेक्टर-९, चण्डीगढ़-१६००१७
६. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर-७९१११११
७. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक, सिक्कम-७३७१०१
८. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को इस अनुरोध के साथ कि वे अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाले विद्यालयों के सभी प्रमुखों को कार्रवाई एवं अनुपालन के लिए शीघ्र प्रेशित करें ।
९. सभी शिक्षा/सहायक शिक्षा अधिकारियों को ।
१०. सीबीएसई के अध्यक्ष महोदय के कार्यकारी अधिकारी को सूचनार्थ ।
११. सचिव, सीबीएसई के व्यक्तिक सहायक को सूचनार्थ ।
१२. परीक्षा नियंत्रक, सीबीएसई के व्यक्तिक सहायक को सूचनार्थ ।
१३. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के व्यक्तिक सहायक को सूचनार्थ ।
१४. विभागाध्यक्ष (एड्यूसेट) के व्यक्तिक सहायक को सूचनार्थ ।
१५. सचिव, केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय प्रशासन, ई एफ एफ ई एस एस प्लाजा, सैक्टर-३, रोहिणी, दिल्ली -११००८५
१६. अतिरिक्त निदेशक जनरल, निदेशक जनरल ऑफ आर्मी एज्यूकेशन, ए विंग सेना भवन, डीएचक्यू, पी.ओ.नई दिल्ली ।
१७. उप निदेशक शिक्षा, बोर्डर सुरक्षा फोर्स ब्लॉक १०, सीजीओ कॉम्पलैक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली -११०००३ ।
१८. संयुक्त सचिव (आई.टी.), सीबीएसई को इस अनुरोध के साथ कि वे इस परिपत्र को वेबसाईट पर अपलोड करें ।
१९. जन सम्पर्क अधिकारी, सीबीएसई ।

निदेशक (शैक्षिक)

परिशिष्ट ।

कक्षा ९वीं (गृह विज्ञान)
कोड सं० ०६४
द्वितीय सत्र (अक्तूबर २००९ -मार्च २०१०)

योगात्मक निर्धारण-।।

निम्नलिखित प्रसंगों से मूल्यांकन किया जाएगाः

१. इकाई ।।। : खाद्य एवं स्वास्थ्य से इसका संबंध
२. इकाई ।V : भोजन बनाने की पद्धतियां
३. इकाई V। : घर में सुरक्षा
४. इकाई V।। : बाजार में उपलब्ध वस्त्र
५. इकाई V।।। : वस्त्रों का चयन

प्रश्न पत्र का डिजाइन

प्रश्नों का प्रकार	प्रश्नों की संख्या	प्रत्येक प्रश्न के लिए अंक	कुल अंक
बहु विकल्पीय प्रश्न	१०	१	१०
लघु उत्तर प्रकार ।	९	२	१८
लघु उत्तर प्रकार ।।	४	३	१२
	२३ प्रश्न		४० अंक

दो रचनात्मक और एक योगात्मक निर्धारण होगाः

निर्धारण	**भारांक**	**प्रस्तावित अवधि**
रचनात्मक-३	१० प्रतिशत	अक्तू (२००९)-दिस (२००९)
रचनात्मक-४	१० प्रतिशत	जन(२०१०)-फर (२०१०)
योगात्मक निर्धारण-२	४० प्रतिशत	मार्च (२०१०)

रचनात्मक निर्धारण में शामिल होंगे-

- कक्षा परीक्षा/इकाई परीक्षा/मौखिक परीक्षा- सिद्धांत पर आधारित।
- दत्तकार्य/प्रोजेक्ट- सिद्धांत पर आधारित।
- पाठ्यचर्या के अंत में प्रस्तावित प्रयोगात्मकों पर आधारित प्रयोगात्मक कार्य। फाइल का रख-रखाव, मौखिक परीक्षा एवं प्रयोगात्मकों के संचालन के बारे में निर्धारण किया जाना है।
- सिद्धांत में प्रसंग से संबंधित सूचनापरक विज्ञापनों पुस्तिकाओं, प्रचार सामग्री तथा पृष्ठ स्मृतियों का विकास।
- संबंधित प्रसंगों -सुरक्षा, पोषण, परिधानों के बारे में विशेषज्ञों द्वारा शिक्षाप्रद व्याख्यान सत्र।

रिपोर्ट लेखन के आधार पर निर्धारण किया जाना है।

- क्षेत्रीय दौरे शिल्प मेला, भोजन प्रक्रिया इकाई उद्योग जैसे स्थानों का दौरा।
- क्षेत्रीय दौरे का निर्धारण रिपोर्ट लेखन के आधार पर किया जाना है।
- सूचना पट्ट पर सूचना की प्रदर्शनी
- संबंधित प्रसंग के बारे में प्रश्नोत्तरी का संचालन

रचनात्मक निर्धारण के प्रस्तावित प्रोजेक्ट

१. प्राथमिक उपचार बॉक्स तैयार करना
२. दर्जी से परिधानों के नमूने एकत्र करना और उनकी दर्शनीयता एवं बुनावट को तालिकाबद्ध करना।
३. आग से बचाव के बारे में पम्फलेट एकत्रित करना और अपने विद्यालय में अग्नि सुरक्षा उपायों के बारे में रिपोर्ट तैयार करना।
४. घर पर खाना बनाने की विधियों की सूची बनाना तथा इसके रंग और बनावट में आए परिवर्तनों का अनुभव करना।
५. दाहक परीक्षण का प्रयोग करते हुए वस्त्र नमूनों की पहचान करना।
६. घाव (जलने, कटने, गिरने, जहर से) से पीड़ित व्यक्ति को प्रथम उपचार देने के बारे में चार्ट/पोस्टर बनाना।

प्रश्नोत्तरी के प्रस्तावित प्रसंग

१. पोषण एवं स्वास्थ्य
२. गृह-सुरक्षा
३. परिधान एवं उनके उपयोग

परिशिष्ट-।।

सूचना प्रौद्योगिकी के आधार (कोडः १६५)
कक्षा ९वीं योगात्मक परीक्षा-।। (मार्च २०१०)

प्रसंगः

इकाई-।

- परिकलन प्रौद्योगिकी
- सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी

इकाई-।।

- परिचालन प्रणाली- आधारभूत धारणाएं
- शब्द संसाधन उपकरण
- प्रस्तुतीकरण उपकरण
- स्प्रेडशीट उपकरण

योगात्मक-।। प्रश्न पत्र के लिए संरचना

अधिकतम अंकः ८० समयः २१/२ से ३ घंटा

क्र०सं०	प्रश्नों का प्रकार	प्रश्नों की संख्या	प्रत्येक प्रश्न के लिए अंक	कुल अंक
१	बहुविकल्पीय प्रश्न (प्रोगात्मक कौशल)	०२ (इकाई-।ः ५ प्रश्न) (इकाई-।।ः १० प्रश्न)	२	३०
२	अति लद्यु उत्तर (सिद्धांत)	१० (इकाई-।ः २ प्रश्न) (इकाई-।।ः ८ प्रश्न)	१	१०
३	लद्यु उत्तर प्रकार-। (सिद्धांत)	८ (इकाई-।ः २ प्रश्न) (इकाई-।।ः ६ प्रश्न)	२	१६
४	लद्यु उत्तर प्रकार-।। (सिद्धांत)	१० (इकाई-।ः २ प्रश्न) (इकाई-।।ः ८ प्रश्न)	३	३०

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

"शिक्षा केंद्र", २, कम्युनिटी सेंटर,

प्रीत विहार, दिल्ली-११००९२

सीबीएसई/एसीएडी/ईओ(एल)/आरपीआर/२००६ दिनांक २१ अक्तूबर, २००६

परिपत्र संख्या ५४

सीबीएसई से संबद्ध स्वतंत्र
विद्यालयों के सभी प्रधानाचार्य

विषयः अंग्रेजी भाषा में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सीसीई) के रूप में पढ़ने की आदत को बढ़ावा देना।

प्रिय प्रधानाचार्य,

बच्चों में पढ़ने की अच्छी आदत डालना हमेशा शिक्षा से जुड़े सभी लोगों की चिंता का विषय रहा है। अब माध्यमिक शिक्षा में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन और ग्रेडिंग प्रणाली लागू करने से आवधिक अभिव्यक्ति परीक्षाओं के अंत में अंक प्राप्त करने के प्रतिमान शिक्षण और बेहतर भाषा कौशल प्रक्रिया में बदल गए हैं।

सभी बातों के साथ-साथ सूचना, मनोरंजन, वीडियो और यहां तक कि पुस्तकों तक भी इंटरनेट के माध्यम से पहुंचा जा सकता है। वास्तव में, बच्चों को पुस्तक पढ़ने पढ़ाई-लिखाई या पुस्तकों में दिए गए लेखकों, कहानियों, पात्रों और विचारों को पढ़ने के लिए कहना आज एक चुनौती बन गया है । बच्चों को यह कहना ही पर्याप्त नहीं है कि कौन-सी पुस्तकों को पढ़ना अच्छा है क्योंकि अच्छी पुस्तकों को पढ़ने का चयन करने से यह सुनिश्चित नहीं हो जाएगा कि बच्चा एक अंश पढ़ेगा और एक अच्छा पाठक बन जाएगा। इस संबंध में बच्चों की मदद करने के लिए एक सजग प्रयास करने की आवश्यकता है ताकि पाठ्यपुस्तकें सार्थक सिद्ध हों। किसी भी पाठ्यपुस्तक को पढ़ने से निम्नलिखित प्रयोजन हल होने चाहिएः

१. भिन्न-भिन्न गति से मौन वाचन करना, जो पढ़ने के प्रयोजन पर निर्भर करेगा।

२. विभिन्न प्रकार की पुस्तकों के लिए भिन्न-भिन्न तरीके अपनाना, जो साहित्यिक और गैर-साहित्यिक दोनों हों।

३. अभिनिर्धारित पाठ्य को समझना।

४. पाठ्यपुस्तक के मुख्य बिंदुओं की पहचान करना।

५. शब्दकोश और व्याकरण की सहायता से पाठ के विभिन्न भागों के बीच संबंध को समझना।

६. इस बात का पूर्वानुमान लगाना और सोचना कि आगे क्या होने वाला है।

७. दिए गए प्रसंग में अपरिचित शब्दों का अर्थ निकालना।

८. शब्द के अर्थ और उसके प्रयोग के संबंध में शब्दकोश से जानकारी प्राप्त करना।

९. पाठ में दिए गए विचारों का विश्लेषण करना, उनकी व्याख्या करना और उनके अर्थ का अनुमान लगाना (और मूल्यांकन करना)।

१०. प्रयोजन विशेष के लिए पाठ से अपेक्षित सूचना का चयन करना और उद्धरण देना।

११. सरसरी तौर पर पढ़कर और फिर ध्यान से पढ़कर जैसे अध्ययन कौशलों का उपयोग करके संदर्भ सामग्री को दोबारा पढ़ना और उसका संश्लेषण करना।

१२. उसी थीम पर उपलब्ध अन्य सामग्री से संबंध स्थापित करके पाठ का अर्थ निकालना (और अपने अनुभव और ज्ञान से अर्थ निकालना) और अपने आनंद के लिए अधिक से अधिक पढ़ना।

१३. निजी आनन्द के लिए विस्तृत अध्ययन करना।

एक अच्छा पाठक प्रायः स्वतंत्र शिक्षार्थी होता है और अपने जीवन में युक्तियुक्त तरीके से अपना निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र विचारक बन जाता है। ऐसा शिक्षार्थी निश्चित रूप से एक आलोचक विचारक होने के योग्य बन सकता है। पुस्तकों और बच्चों को एकसाथ लाना वास्तव में एक चुनौती है, विशेषतः आज के समय में जब मीडिया में खुलेपन का वातावरण है।

बच्चों में पढ़ने की आदत डालने का उद्देश्य एक ऐसे स्वतंत्र विचारक व्यक्ति को पैदा करना है, जो अपनी क्षमता से ही अपना ज्ञान बढ़ाता है और किसी भी बात का वास्तविक और निष्पक्ष आलोचनात्मक अर्थ निकालता है, उसका विश्लेषण करता है और मूल्यांकन भी करता है।

इक्कीसवीं शताब्दी के लिए ऐसे शिक्षार्थी पैदा करना एक प्रकार से उन्हें ऐसे स्वतंत्र शिक्षार्थी बनाना है, जो *"शिक्षा ग्रहण करें, ग्रहीत को अनसिखा करें और पुनः सीखें"* और यदि हमारे बच्चों में पढ़ने की आदत होती है तो वे स्वयं का पुनः अनुसंधान करना सीख जाएंगे और ऐसी अनेक चुनौतियों का सामना कर सकेंगे, जो उनके जीवन में आएंगी।

पढ़ना केवल सूचना प्राप्त करना या शब्द का सही उच्चारण करना नहीं है। यह लेखक और पाठक के बीच ऐसा संवाद स्थापित करता है, जिसमें पाठक और लेखक एक-दूसरे के अनुभव और ज्ञान का आपस में आदान-प्रदान करते हैं जिससे उन्हें पाठ को समझने में सहायता मिलती है और पाठ का ऐसा दूसरा अर्थ निकालने की क्षमता आती है, जो लेखक का अंतर्निहित आशय हो। अच्छे पाठक आलोचक पाठक होते हैं, जिनमें पुस्तक में दिए गए शब्दों को ही गहराई से समझने की क्षमता के साथ-साथ उसके आस-पास के वास्तविक जगत की भी समझ होती है। उन्हें केवल यही बात याद नहीं रहती है कि उन्होंने क्या पढ़ा है बल्कि वे इसे भली-भांति समझते भी हैं। पाठ के बारे में उनके आलोचनात्मक पाठन और बोध से उनमें नई समझ, समस्याओं का समाधान, समस्याओं का आकलन करने की क्षमता आ जाती है और वे अन्य पाठों और अनुभवों के साथ उन्हें जोड़ पाते हैं। अध्ययन से तात्पर्य यह नहीं है कि केवल खाली समय व्यतीत करने के लिए पढ़ा जाए अपितु इसका आशय है सूचना प्राप्त करने के लिए पढ़ना। बच्चों को विज्ञान और प्रौद्योगिकी, राजनीति और इतिहास जैसे विविध विषयों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। इससे उनके आलोचनात्मक चिंतन कौशल में सुधार होगा और इससे उनकी एकाग्रता में सुधार करने में भी मदद मिलेगी।

विद्यालय के पुस्तकालय को अद्यतन रखा जाना चाहिए और पुस्तकालय के लिए पुस्तकों, सीडी संदर्भ सामग्री की खरीद करने में वार्षिक बजट की समुचित राशि खर्च की जानी चाहिए। अपने संसाधनों को मजबूत करके पुस्तकालय को केवल पुस्तकों और सूचना के एक भंडार के रूप में ही नहीं अपितु ज्ञान-सृजन के केंद्र के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। बच्चों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वे जब चाहें, पुस्तकालय जाएं। पुस्तक पढ़ने, पुस्तकालय में उपलब्ध विभिन्न प्रकार की पुस्तकों की सूचना, शब्दावली बढ़ाने वाले खेल जैसी उपलब्धता के बारे में कई प्रकार की सूचनाएं जारी करना पुस्तकालय का एक भाग हो सकता है। संक्षेप में, पुस्तकालय में एक स्वागतयोग्य और आमंत्रणयोग्य वातावरण पैदा करना बच्चों को इस ओर प्रेरित करने के लिए पहला कदम है ताकि वे पुस्तकालय में आएं और पढ़ने के लिए पुस्तकों का चयन करें। बच्चों को इस बात

के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा कि यदि वे अपने अध्यापकों और प्रधानाचार्यों को अपना आदर्श मानते हैं तो पढ़ाई करें। इसीलिए किसी भी पुस्तक को कक्षा में लगाने से पहले अध्यापकों द्वारा उसे पढ़ा जाना चाहिए।

प्रायः यह देखा जाता है कि बच्चों को पुस्तक पढ़ने का एक परियोजना कार्य सौंपा जाता है, जिसमें बच्चों से अपेक्षा की जाती है कि वे एक पुस्तक पढ़ें और उसके संबंध में एक रिपोर्ट लिखें। हालांकि इस परियोजना को सौंपने के पीछे जो भावना है, वह सराहनीय है, परंतु प्रायः देखा जाता है कि विद्यार्थी इसमें रुचि नहीं लेते हैं या इससे वह उद्देश्य पूरा नहीं होता है जिससे विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत डाली जा सके।

पुस्तक पढ़ने से विद्यार्थी सृजनात्मकता की ओर अग्रसर होता है और पुस्तक में दिए गए लेखक के विचारों को व्यक्तिगत प्रतिक्रिया के रूप में अभिव्यक्त कर सके - निम्नलिखित बिंदुओं के रूप में :-

- संक्षिप्त समीक्षा।
- कहानी का नाट्य रूपांतरण।
- पात्रों के संबंध में टिप्पणी करना।
- कथानक, कहानी और पात्रों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।
- कहानी के पात्रों में समानता और विषमता ढूंढना और उसी लेखक या किसी अन्य लेखक द्वारा लिखी गई कहानियों के साथ उसके पात्रों की समता और विषमता ढूंढना।
- कहानी की समाप्ति या कहानी की समाप्ति के बाद पात्र के जीवन के बारे में निष्कर्ष निकालना।
- कहानी में पात्र के क्रियाकलापों का समर्थन करना।
- युवा बच्चों के लिए उपन्यास/ पाठ से श्रव्य कहानी बनाना।
- लेखक के साथ संवाद करना।
- साहित्य उत्सव मनाना, जिसमें कई पात्र आपस में बात करते हों।
- लेखक/ कवि/ नाटककार के कार्य और पात्रों की रक्षा के लिए उन्हीं की तरह अभिनय करना।
- पुस्तक, लेखक या थीम को बताने के लिए संगोष्ठी और सम्मेलन आयोजित करना।
- दूसरी भाषाओं में मूल रूप से अन्यथा उसी प्रकार के पाठ ढूंढना और उसमें भिन्नता और समानता देखना।
- पढ़े गए उपन्यासों/ लघु कहानियों से ग्राफिक उपन्यास तैयार करना।
- उपन्यास या कहानी की घटना का नाट्य रूपांतरण करना।
- स्वयं की कहानियों की रचना करना।

विद्यालय में पठन परियोजना

१. केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अपर प्राइमरी और माध्यमिक कक्षाओं के लिए पठन परियोजना लागू करने की योजना बना रहा है। इस परियोजना के लिए जिन पुस्तकों की सिफारिश की गई है, वे अनुबंध-१ में दी गई हैं।

२. विद्यालय इनमें से कुछ पुस्तकों को चुन सकते हैं या अपनी इच्छा से अन्य पुस्तकें चुन सकते हैं।

३. विद्यालय अपने लिए अलग-अलग मापदंड तय कर सकता है लेकिन प्रत्येक बच्चे को प्रत्येक सत्र में कम से कम एक पुस्तक पढ़नी होगी।

अध्यापक निम्नलिखित में से कोई विकल्प दे सकते हैं:

- एक पुस्तक;
- एक लेखक की पुस्तकें; और
- एक प्रकार की पुस्तकें, जो पूरी कक्षा द्वारा पढ़ी जाएंगी।

इस परियोजना से स्वतंत्र अधिगम/पठन कौशल विकसित होना चाहिए। अतः चयनित पुस्तकों को कक्षा में नहीं पढ़ाया जाना चाहिए अपितु उन्हें क्रियाकलापों के माध्यम से लागू किया जाना चाहिए और यह बात विद्यार्थियों पर छोड़ दी जानी चाहिए कि वे अपनी इच्छा से उसे पढ़ें। लेकिन अध्यापक पुस्तक पढ़ने में बच्चे की प्रगति या सफलता का मूल्यांकन करने के लिए पुस्तकों का चयन करें। इस प्रकार का मूल्यांकन मौखिक या लिखित प्रगति रिपोर्ट से, विद्यार्थी की डायरी में की गई प्रविष्टियों को देखकर, पुस्तक के बारे में उनसे चर्चा करके, उन्हें छोटी प्रश्नोत्तरी देकर या पुस्तक/ लघु कहानी के बारे में कार्य-प्रपत्र देकर किया जा सकता है। बीच में किए जाने वाले मूल्यांकन का तरीका अध्यापक द्वारा उस प्रकार तय किया जाए, जैसा वह उचित समझे।

ये बिंदु केवल रचनात्मक मूल्यांकन (एफ१, एफ२, एफ३ और एफ४) के लिए उपयोग में लाए जाएं। समीक्षा करना, स्क्रिप्ट लिखना, पढ़ना, चर्चा करना, ओपन हाऊस, विचार-विनिमय करना, लेखक के साथ बात-चीत करना जैसे मूल्यांकन के विभिन्न तरीकों पर विचार किया जा सकता है।

कृपया इसे अंग्रेजी पढ़ाने वाले और अंग्रेजी पढ़ने वाले सभी अध्यापकों और विद्यार्थियों के ध्यान में लाया जाए।

भवदीया,

(मीनाक्षी जैन)

सहायक शिक्षा अधिकारी

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत संगठन)
शिक्षा केन्द्र" २, समुदाय केन्द्र, प्रीत विहार, दिल्ली-११०३०१
''शिक्षा सदन'' 17, राउज एवेन्यू
नई दिल्ली –110002

सं0 सीबीएसई/ईओ/परि./2009 दिनांक 24.11.2009
परिपत्र सं0 59

सी.बी.एस.ई से सम्बद्ध
सभी विद्यालयों के प्रमुख

प्रिय प्रधानाचार्य,

कक्षा IX परीक्षा 2010 के लिए **सूचना प्रौद्योगिकी के आधार** में रचनात्मक निर्धारण तथा योगात्मक निर्धारण के लिए मार्गदर्शन परिशिष्ट–1 में दिये गए हैं ।

इसे कक्षा IX के लिए सिखाने एवं सीखने में शामिल सभी शिक्षकों एवं छात्रों के ध्यान में लाया जाए ।

भवदीया,

(सी. गुरूमूर्ति)
निदेशक (शैक्षिक)

प्रतिलिपि :–

1. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली–110016 ।
2. निदेशक, नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली ।
3. शिक्षा निदेषक, शिक्षा निदेषालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सरकार, पुराना सचिवालय, दिल्ली –110054
4. शिक्षा निदेशक, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह सरकार, पोर्ट ब्लेयर –744101
5. जन अनुदेशन निदेशक (विद्यालय), राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सचिवालय सेक्टर–9, चण्डीगढ़–160017
6. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर–791111
7. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक, सिक्कम–737101
8. सचिव, केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय प्रशासन, ई एफ एफ ई एस एस प्लाजा, सैक्टर–3, रोहिणी, दिल्ली–110085
9. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को इस अनुरोध के साथ कि वे अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाले विद्यालयों के सभी प्रमुखों को कार्रवाई एवं अनुपालन के लिए शीघ्र प्रेषित करें ।
10. सभी शिक्षा/सहायक शिक्षा अधिकारियों को ।
11. संयुक्त सचिव (आई.टी.), सीबीएसई को इस अनुरोध के साथ कि वे इस परिपत्र को वेबसाईट पर अपलोड करें ।
12. पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी, केमाशिबो ।
13. सीबीएसई के अध्यक्ष महोदय के कार्यकारी अधिकारी ।
14. परीक्षा नियंत्रक, सीबीएसई के व्यक्तिक सहायक ।
15. सचिव, सीबीएसई के व्यक्तिक सहायक ।
16. निदेशक (शैक्षिक), के व्यक्तिक सहायक ।
17. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के व्यक्तिक सहायक ।
18. विभागाध्यक्ष (एड्यूसेट) के व्यक्तिक सहायक ।
19. जन सम्पर्क अधिकारी, सीबीएसई ।

निदेषक (शैक्षिक)

अनुबंध-I

सूचना प्रौद्योगिकी की नींव (कोड : १६५)

दूसरी अवधि (अक्तूबर २००६ से मार्च २०१०)

दूसरी अवधि में कक्षा IX के लिए दो रचनात्मक परीक्षा (एफए ३ और एफए ४) और एक अभिव्यक्ति परीक्षा होगी।

अभिव्यक्ति मूल्यांकन-II, जो मार्च २०१० में किया जाएगा, के लिए पाठयक्रम और प्रश्न-पत्र का प्रारूप इस प्रकार होगाः

पाठयक्रम

यूनिट I

- कंप्यूटिंग प्रौद्योगिकी
- संचार प्रौद्योगिकी

यूनिट II

- प्रचालन प्रणाली - मूल संकल्पना
- वर्ड प्रोसेसिंग के साधित्र
- प्रस्तुतीकरण के साधित्र
- स्प्रेडशीट के साधित्र

अभिव्यक्ति प्रश्न-पत्र का रूप

पूर्णांक : ८० अवधि : २½ से ३ घंटे

क्रम सं.	प्रश्नों का प्रकार	प्रश्नों की संख्या	प्रत्येक प्रश्न के लिए अंक	कुल अंक
१.	बहु-विकल्प प्रश्न (कौशल)	१२ (यूनिट I - २ प्रश्न) (यूनिट II - १० प्रश्न)	२	२४
२.	अति लघु उत्तर (सिद्धांत)	१० (यूनिट I - २ प्रश्न) (यूनिट II - ८ प्रश्न)	१	१०
३.	लघु उत्तर - प्रकार I (सिद्धांत)	८ (यूनिट I - २ प्रश्न) (यूनिट II - ६ प्रश्न)	२	१६
४.	लघु उत्तर - प्रकार I (सिद्धांत)	१० (यूनिट I - २ प्रश्न) (यूनिट II - ८ प्रश्न)	३	३०
		४०		**८०**

एफए ३ का कार्य २० दिसंबर तक पूरा किया जाना चाहिए। एफए ४ कार्य १० फरवरी तक पूरा किया जाना चाहिए।

रचनात्मक मूल्यांकन

क. जैसा कि नाम से ही पता चलता है, यह मूल्यांकन संकल्पना की रचनात्मक अवस्था में किया जाना चाहिए। इसे मोटे तौर पर इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता हैः

- तैयारी के ज्ञान के संबंध में प्रविष्टि के स्तर पर मूल्यांकन
- निश्चित अवस्थाओं में संकल्पना/ पाठ के कार्य संपादन के दौरान मूल्यांकन किया जाएगा, जिसमें स्थितियों के अनुसार परिवर्तित किया जाएगा।
- शिक्षण के परिणाम के स्तर को सुनिश्चित करने के लिए निर्गत स्तर पर मूल्यांकन।

ख. गुणवत्ता की सतत् बढ़ोतरी के लिए निदान और उपचार द्वारा इसके कार्यात्मक रूप का चरित्र-चित्रण किया जाता है।

ग. **मूल्यांकन के मापदंडः**

- उपचारात्मक प्रक्रिया के लिए निदान और परीक्षण के लिए कार्य स्वीकार करने के लिए विद्यार्थियों की सुग्राह्यता,
- उत्साह को सिद्ध करने और अपेक्षित गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए संचालन,
- एक उपलब्धि से दूसरी उपलब्धि के माध्यम से संभावित हस्तांतरण की क्षमता,
- स्व-मूल्यांकन की क्षमता और समान योग्यता वाले समूह के साथ चर्चा करने की क्षमता।

घ. **अध्यापक के कार्यः**

- शिक्षण संकल्पना (संकल्पनाओं) की पूर्वापेक्षाओं का अभिनिर्धारण
- शिक्षण की प्रक्रिया को उप-अवस्थाओं में विभाजित करना
- शिक्षण के परिणामों की गणना
- उपर्युक्त प्रत्येक अवस्था के निदान के लिए उपयुक्त परीक्षण सामग्री तैयार करना
- ऐसी त्रुटि का पूर्वानुमान लगाने के लिए उपयुक्त उपचारात्मक कार्य तैयार करना, जो सामान्यतः विद्यार्थी को परिवर्तन करने की ढील देने के कारण पैदा होती है।
- भिन्न-भिन्न परीक्षण पद्धतियों के लिए विद्यार्थियों की रुचि, अभिवृत्ति, पारिवारिक पृष्ठभूमि आदि को समझना और अपने पास विस्तृत विवरण तैयार रखना।
- शिक्षार्थियों की रुचि बनाए रखने के लिए परीक्षण के विधि साधित्र उचित मात्रा में रखना, इससे अपेक्षित फीडबैक भी सफलतापूर्वक मिलेगी।
- जब परीक्षण की विभिनन पद्धतियां अपना रहे हों तो उस संघटक की उपेक्षा न करें, जिसका वास्तव में परीक्षण किया जा रहा हो। उदाहरणार्थ यदि विद्यार्थियों की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कथन के व्याकरणिक ज्ञान की क्षमता का परीक्षण किया जा रहा है और यदि कहानी को संवाद के रूप में परिवर्तित करने का अभ्यास किया जा रहा हो तो अध्यापक को चाहिए कि वह बच्चे की अभिनय-कला संबंधी प्रतिभाा का मूल्यांकन करके विषयांतर न करे।

- विद्यार्थियों की सीखने की व्यक्तिगत क्षमता को महत्त्व दें और पूरा धैर्य बनाए रखें। माता-पिता और आसन्न प्राधिकारियों से संपर्क बनाए रखें, उनके प्रति तदानुभूति और जिम्मेदारी की भावना बनाए रखें।

- प्रत्येक विद्यार्थी के मामले में विभिन्न विवरण रखें और किसी मूल्यांकन विशेष के औचित्य का रिकार्ड रखें और देखरेख करें। यह जरूरी नहीं है कि यह मात्रा में बहुत अधिक हो। उचित समयावधि में संभावित परिणामों के आकलन की पद्धति अपनाई जाए।

- कक्षा में शिक्षण की सहायता के लिए प्रभावी गृह-कार्य का उपयोग करें। पाठ्यक्रम पूरा करने की तुलना में अधिक से अधिक समय साथियों के साथ क्रियाकलाप और स्व-मूल्यांकन करवाएं और व्यक्तित्व के विकास को बढ़ावा दें और संशोधन कार्य के भार को कम करें।

- रचनात्मक मूल्यांकन के लिए सुझाए गए कुछ क्रियाकलाप इस प्रकार हैं:

सेट क : (स्प्रेडशीट और मूल्यांकन साधित्र पर आधारित)

विद्यालय और कक्षा का परिणाम मौसम की भविष्यवाणी संबंधी रिपोर्ट प्रौद्योगिकी की प्रवृत्ति पोस्टर तैयार करना

सेट ख : (सामाजिक प्रभावों पर आधारित)

आईपीआर मुद्दे सूचना सुरक्षा सूचना प्रौद्योगिकी में नैतिकता सूचना प्रौद्योगिकी में वृत्ति (भविष्य)

अध्यापन एक दिशानिर्देश दें कि इसपरियोजना पर कार्य करते समय विद्यार्थियों को इनका पालन करना चाहिए। यदि दो समूह एक ही विषय को अपनाएं तो अध्यापक उन्हें नीचे दिए गए तरीके से **उसी विषय के विभिन्न पहलुओं का कार्य** सौंप सकता है:

मेल मर्ज (वर्ड प्रोसेसिंग)

आपके विद्यालय में स्वर्ण जयंती समारोह के भाग के रूप में कई महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। श्री सिद्धार्थ शर्मा आपके विद्यालय के सांस्कृतिक सचिव हैं और उन्हें यह जिम्मेदारी सौंपी गई है कि वे कई अंतर्विद्यालयी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए पूरे भारत से विद्यालयों को आमंत्रित करें।

आपसे कहा गया है कि आप आमंत्रण-पत्र का मसौदा तैयार करने और आमंत्रित किए जाने वाले सभी विद्यालयों के डाक पते और संपर्क व्यक्ति का डेटाबेस तैयार करने में श्री सिद्धार्थ की मदद करें। कृपया मेल-मर्ज की सुविधा का उपयोग करें और सभी अतिथियों को भेजे जाने वाले आमंत्रण-पत्र को प्रिंट करें।

ग्रीटिंग कार्ड (वर्ड प्रोसेसिंग)

प्रत्येक वर्ष आपके माता-पिता ग्रीटिंग कार्ड खरीदने पर बहुत पैसा और समय खर्च करते हैं। इस वर्ष यह निर्णय लिया गया है कि सभी कार्डों का डिजाइन और प्रिंट आपके द्वारा किया जाएगा, किसी भी प्रकार के (अर्थात नये वर्ष, दीपावली, मेरी क्रिसमस, जन्म दिन) कार्ड तैयार करने में वर्ड प्रोसेसिंग में अपनी विशेषज्ञता का प्रयोग करें।

शिक्षण की सहायक सामग्री (प्रस्तुतीकरण संबंधी समस्या)

श्री पवन देसाई भौतिक विज्ञान के अध्यापक हैं, जो आपके विद्यालय में कक्षा VII को पढ़ाते हैं। आजकल वे तारे और सौर मंडल संबंधी अध्याय पढ़ा रहे हैं। उन्होंने यह महसूस किया है कि विद्यार्थियों को कुछ एमिनेशन और चित्रों के अध्याय से प्रस्तुतीकरण करने से वे इसे विद्यार्थियों को बेहतर ढंग से समझा सकेंगें और याद करवा सकेंगे। चूंकि श्री पवन देसाई को प्रस्तुतीकरण संबंधी साधित्रों की जानकारी नहीं है, अतः आपसे ऐसा प्रस्तुतीकरण तैयार करने के लिए कहा गया है, जिसे शिक्षण संबंधी सहायक सामग्री के रूप में प्रयोग करने में अध्यापक को सहायता मिलेगी। पाठ और चित्रों के एनिमेशन का ऐसा प्रयोग करें कि इसका अच्छा प्रभाव पड़े।

उत्पाद विज्ञापन (प्रस्तुतीकरण की समस्या)

आपके पड़ोसी श्री अधिकारी की आटोमोबाइल के अतिरिक्त पुर्जों के विनिर्माण की इकाई है। उन्होंने कानपुर में उत्पाद के विपणन के लिए तीन सेल्समैन नियोजित किए हैं। तीन माह कार्य करने के बाद सेल्समैनों ने महसूस किया कि श्री अधिकारी उन्हें एक-एक लेपटॉप और एक-एक प्रस्तुतीकरण किट दें ताकि बिक्री और बढ़ाई जा सके। क्योंकि श्री अधिकारी को कंप्यूटर का ज्ञान नहीं है, उन्होंने अपने उत्पाद के संबंध में एक प्रस्तुतीकरण तैयार करने के लिए आपकी सहायता मांगी है। पाठ और चित्रों के एनिमेशन का ऐसा प्रयोग करें कि उसका अच्छा प्रभाव पड़े।

निम्नलिखित विषयों में से किसी पर प्रस्तुतीकरण की रिपोर्ट तैयार की जाएगीः

सूचना प्रौद्योगिकी में नैतिकता

आपका एक मित्र हमेशा कई घंटों तक इंटरनेट का प्रयोग करता रहता है। जब उसे इसके बारे में पूछा गया तो उसने अपनी हार्ड डिस्क की विषय-वस्तु बताई, जो एक पाइरेटेड सॉफ्टवेयर था। सॉफ्टवेयर की पाइरेसी से नैतिकता के ये प्रश्न उठते हैं कि क्या सॉफ्टवेयर संगीत या मूवी की नकल करना अनैतिक और गलत है? यदि हां तो आज कंप्यूटर की नैतिकता से संबंधित अन्य मुद्दे क्या हैं और इनका समाधान क्या है?

सूचना प्रौद्योगिकी में भविष्य (वृत्ति)

गोपाल कक्षा X का विद्यार्थी है, जिसने यह तय नहीं किया है कि जब वह कक्षा XI में जाएगा तो विज्ञान विषयों के साथ क्या विषय ले। हालांकि विद्यालय में उसके अध्यापक और घर में उसके माता-पिता उसे कंप्यूटर साइंस लेने की सलाह दे रहे हैं, वह उनके विचार से पूरी तरह सहमत नहीं है। आपसे अपेक्षा की जाती है कि आप बाजार का अध्ययन करें और आगामी वर्षों में सूचना प्रौद्योगिकी में भविष्य (वृत्ति) के संबंध में एक रिपोर्ट तैयार करें ताकि उसे विषयों का चयन करने में सहायता मिले।

सूचना सुरक्षा प्रश्न १ः

सूचना सुरक्षा से क्या तात्पर्य है? संगठनों (उदाहरणार्थ थल सेना) द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाली ऐसी विभिन्न सूचना पद्धतियां (जैसे इनक्रिप्शन पद्धति) क्या हैं, जिनके लिए उच्च्व स्तरीय सूचना सुरक्षा आवश्यक हैं इसके साथ ही उन पद्धतियों का पता लगाएं, जिनका पहले प्रयोग किया जाता था। उदाहरण के लिए द्वितीय विश्व युद्ध के समय कोडिंग मशीन प्रयोग में लाई जाती थी। उस समय किस प्रकार के कोड का प्रयोग किया जाता था? कोडित सूचना का डिकोडीकरण कैसे किया जाता था? इस विषय पर कई युक्तियां बनाई गई हैं। इस विषय के संबंध में इन युक्तियों में क्या किया गया है? भावी आवश्यकताएं और प्रवृत्तियां क्या हैं? विभिन्न वेबसाइटों को देखकर सूचना एकत्र करें और एक प्रस्तुतीकरण तैयार करें।

सूचना सुरक्षा प्रश्न २:

सुपर फाइन कॉरपोरेशन ने एक ऐसा सॉफ्टवेयर बनाया है, जो कंप्यूटर पर किसी व्यक्ति द्वारा सभी क्रियाकलापों को रिकार्ड कर देता है। कई कंपनियों ने इस सॉफ्टवयेर की खरीद की है। कंपनियां इसकी खरीद के लिए इतनी उत्सुक क्यों हैं? इस सॉफ्टवयेर से किस समस्या का समाधान किया जा सकता है? ऐसा बताया गया है कि कुछ लोग इस बात से नाराज हैं कि कंपनियां इसका प्रयोग कररही हैं। कौन नाराज हो सकते हैं और क्यों? ऐसे सॉफ्टवयेर, उनके कार्य और संगठनों के बारे में सूचना एकत्र करें, जिन्होंने ऐसे सॉफ्टवयेर आदि खरीदे हैं और एक प्रस्तुतीकरण तैयार करें।

बौद्धिक संपदा अधिकार के मुद्दों पर आधारित उदाहरण प्रश्नः

बौद्धिक संपदा क्या है? यह मकान, कार आदि जैसी अन्य भौतिक चीजों से भिन्न कैसे है? किसी भी व्यक्ति या संगठन का नुकसान कैसे होताहै यदि कोई उनकी बौद्धिक संपदा को चुरा ले? हमारे देश के ऐसे साइबर कानून क्या हैं, जो किसी व्यक्ति की बौद्धिक संपदा के अधिकार की रक्षा करता है? बौद्धिक संपदा के संदर्भ में आपकी कक्षा के विद्यार्थी क्या-क्या उल्लंघन करते हैं? इन पहलुओं सहित सूचना एकत्र करें और एक प्रस्तुतीकरण तैयार करें।

प्रस्तुतीकरण कौशल (प्रौद्योगिकी में प्रवृत्ति) पर आधारित उदाहरण प्रश्न

आप सरकार के सलाहकारों में से एक हैं। आपको "प्रौद्योगिकी में प्रवृत्ति" संबंधी ऐसा प्रस्तुतीकरण तैयार करने का कार्य सौंपा गया है, जो देश के सभी मंत्रियों की आगामी बैठक में प्रस्तुत किया जाएगा। ८ स्लाइडों या उससे बड़ा प्रस्तुतीकरण तैयार करें। इसमें निम्नलिखित तथ्यों को शामिल करें:

विद्यमान प्रवृत्तियों पर आधारित भावी संभावनाओं के पाठों का प्रदर्शन।
अपने प्रस्तुतीकरण को सजीवता प्रदान करने वाले संबद्ध रुचिकर चित्र,
लाइन ग्राफ, पाई चार्ट आदि ग्राफ।

स्प्रेडशीट (विद्यालय के परिणामों) पर आधारित उदाहरण प्रश्न

आप अपने विद्यालय के परिणाम तैयार करने के लिए जिम्मेदार हैं। प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा अंग्रेजी, हिंदी, गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे विभिन्न विषयों में प्राप्त अंकों की तालिका तैयार करने के लिए कार्य प्रपत्र तैयार करें। प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा प्रत्येक विषय में प्राप्त कुल अंकों, औसत कुल अंक, उच्चतम अंक, न्यूनतम अंक, प्रत्येक विषय में औसत अंकों का हिसाब लगाने के लिए सूत्र तैयार करें। अपने कार्य प्रपत्र में समुचित चार्ट तैयार करें। इस कार्यप्रपत्र को ऐसा बनाएं कि यह आकर्षक लगे।

स्प्रेडशीट (मौसम का पूर्वानुमान) पर आधारित प्रश्न

मौसम विज्ञान विभाग पिछले कुछ दिनों से तापमान, आर्द्रता और वर्षा के बारे में आंकड़े जमा करता रहा है। मानो कि आप उस तालिका को तैयार करने और आंकड़े रखने के लिए जिम्मेदार हैं। इस आंकड़े को दर्शाने के लिए एक कार्य प्रपत्र तैयार करें और उसमें अपेक्षित और समुचित परिकलन करें।

परियोजना संबंधी दिशानिर्देश

1. ऊपर बताई गई परियोजनाओं के संबंध में विद्यार्थियों को ३-४ सदस्यों (३ सदस्यों को वरीयता) के समूह में अलग-अलग कार्य करना होगा।

2. प्रत्येक समूह अपनी-अपनी कक्षाओं के सभी विद्यार्थियों के सामने अपनी परियोजनाओं को (संगोष्ठी में) प्रस्तुत करेंगे।

3. उपर्युक्त २ सेटों में से प्रत्येक समूह को कोई एक परियोजना का चयन करना होगा।

4. प्रत्येक सेट पर कार्य करने के लिए इन समूहों के सदस्यों को आपस में अदला-बदली करनी होगी।

5. प्रत्येक सदस्य को एक अलग परियोजना रिपोर्ट तैयार करनी होगी।

6. अध्यापक द्वारा दोनों परियोजनाओं का अलग-अलग मूल्यांकन किया जाएगा।

7. प्रत्येक समूह पूरी कक्षा के सामने अपनी परियोजना को प्रस्तुत करेगा। कक्षा के अन्य विद्यार्थी प्रस्तुत की गई परियोजना पर आधारित प्रश्न पूछेंगे, जिनका उत्तर परियोजना समूह के सदस्यों द्वारा दिया जाएगा।

8. अध्ययन को चाहिए कि वह समूह के प्रत्येक सदस्य और संगत/संबद्ध प्रश्न पूछने वाले अन्य विद्यार्थियों का मूल्यांकन करें।

9. परियोजना के मूल्यांकन का मापदंड इस प्रकार होगाः

विषय-वस्तु	५० प्रतिशत
परियोजना के संबंध में किए गए कार्य और योगदान के अनुरूप प्रयोगशाला क्रियाकलाप	१५ प्रतिशत
प्रस्तुतीकरण कौशल	१० प्रतिशत
दिए गए उत्तर	२५ प्रतिशत

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन स्वायत्त संस्था

शिक्षा सदन, १७, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, राउज एवेन्यु, नई दिल्ली-११०००२

सीबीएसई/शि.अ./एस.डी./परि०/२००९ दिनांकः ३०.११.२००९

परिपत्र सं० ६२

सीबीएसई से संबद्ध
सभी संस्थाओं के प्रमुख

प्रिय प्रधानाचार्य महोदय/महोदया,

सीबीएसई द्वारा द्वितीय सत्र (अक्तुबर २००९ - मार्च २०१०) के लिए कक्षा ९वीं में सीसीई के संबंध में जारी दिनांक १२.१०.२००९ के परिपत्र सं० ४२ के क्रम में मार्च २०१० से आयोजित होने वाले कक्षा ९वीं के लिए योगात्मक निर्धारण द्वितीय सत्र के लिए विज्ञान के प्रश्न पत्र के डिजाइन में नियमानुसार संशोधन किया गया है।

संशोधन डिजाइन इस प्रकार है-

क्र०सं०	प्रश्नों का प्रकार	प्रश्नों की संख्या	प्रत्येक प्रश्न के लिए अंक	कुल अंक
१	अति लघु उत्तर प्रकार (वी एस ए)	०५	०१	०५
२	लघु उत्तर प्रकार-। (एस ए-।)	०९	०२	१८
३	लघु उत्तर प्रकार- ।। (एस ए ।।)	०९	०३	२७
४	दीर्घ उत्तर प्रकार (एल ए)	०३	०५	१५
५	एम सी क्यू (प्रयोगात्मक कौशल)	१५	०१	१५
	योग	४१		८०

विज्ञान एवं गणित का पाठ्यक्रम तथा कक्षा ९वीं के योगात्मक निर्धारण ।। के लिए गणित प्रश्न पत्र का डिजाइन-नमूना दिनांक १२.१०.२००९ के परिपत्र के अनुसार वही रहेगा। विज्ञान एवं गणित का अंतिम पाठ्यक्रम एवं रूपांकन संलग्न परिशिष्ट-। तथा परिशिष्ट ।। में दिया गया है।

द्वितीय सत्र में कक्षा ९वीं के लिए विज्ञान एवं गणित में अनुकरण किए जाने वाले रचनात्मक निर्धारण का विवरण संलग्न परिशिष्ट ।।। (विज्ञान) तथा परिशिष्ट ।।। (गणित) में दिया गया है।

इसे कक्षा ९वीं के अध्यापन एवं अध्ययन में सम्मिलित सभी शिक्षकों एवं छात्रों के ध्यान में लाया जाए।

भवदीया,

(डा० सुजतादास)
शिक्षा अधिकारी (एस डी)
सम्पर्क दूरभाषः २३२३७७७९ (कार्यालय)

प्रतिलिपि :- निदेशालयों/केवीएस/एनवीएस/सीटीएसए के प्रमुखों को इस अनुरोध के साथ प्रेषित है कि वे अपने अपने **अधिकार के अंर्तगत के सभी संबंधित विद्यालयों में सूचना का प्रसार करें :-**

१. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, १८, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली -११००१६ ।
२. निदेशक, नवोदय विद्यालय समिति, ए-२८, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली ।
३. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सरकार, पुराना सचिवालय, दिल्ली -११००५४
४. शिक्षा निदेशक, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह सरकार, पोर्ट ब्लेयर -७४४१०१
५. जन अनुदेशन निदेशक (विद्यालय), राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सचिवालय सेक्टर-६, चण्डीगढ़-१६००१७
६. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर-७६११११
७. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक, सिक्कम-७३७१०१
८. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को इस अनुरोध के साथ कि वे अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाले विद्यालयों के सभी प्रमुखों को कार्रवाई एवं अनुपालन के लिए शीघ्र प्रेशित करें ।
९. सभी शिक्षा/सहायक शिक्षा अधिकारियों को ।
१०. सीबीएसई के अध्यक्ष महोदय के कार्यकारी अधिकारी को सूचनार्थ ।
११.सचिव, सीबीएसई के व्यक्तिक सहायक को सूचनार्थ ।
१२. परीक्षा नियंत्रक, सीबीएसई के व्यक्तिक सहायक को सूचनार्थ ।
१३. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के व्यक्तिक सहायक को सूचनार्थ ।
१४. विभागाध्यक्ष (एड्यूसेट) के व्यक्तिक सहायक को सूचनार्थ ।
१५. सचिव, केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय प्रशासन, ई एफ एफ ई एस एस प्लाजा, सैक्टर-३, रोहिणी, दिल्ली -११००८५
१६. अतिरिक्त निदेशक जनरल, निदेशक जनरल ऑफ आर्मी एज्यूकेशन, ए विंग सेना भवन, डीएचक्यू, पी.ओ. नई दिल्ली ।
१७. उप निदेशक शिक्षा, बोर्डर सुरक्षा फोर्स ब्लॉक १०, सीजीओ कॉम्पलैक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली -११०००३
१८. संयुक्त सचिव (आई.टी.), सीबीएसई को इस अनुरोध के साथ कि वे इस परिपत्र को वेबसाईट पर अपलोड करें ।
१९. जन सम्पर्क अधिकारी, सीबीएसई ।

शिक्षा अधिकारी (एस डी)

परिशिष्ट ।

मूल्यांकन योजना-।। सत्र
अक्तुबर २००६ -मार्च २०१०
कक्षा ९वीं विज्ञान

दो रचनात्मक परीक्षा और एक वर्षांत योगात्मक परीक्षा होगी। भारांक तथा समय सारणी इस प्रकार होगीः

परीक्षा का प्रकार	भारांक	समय सारणी
रचनात्मक निर्धारण -३	१० प्रतिशत	अक्तू.-दिस. (२००६)
रचनात्मक निर्धारण -४	१० प्रतिशत	जन.-फर. (२०१०)
योगात्मक निर्धारण-२	४० प्रतिशत	मार्च (२०१०)
योग	६० प्रतिशत	

रचनात्मक निर्धारण ३ तथा ४ में निम्नलिखित सम्मिलित होंगे-

।) सिद्धांत पर आधारित लिखित निर्धारण
।।) सीबीएसई पाठ्यचर्या २००६-२०११ पर आधारित प्रयोगात्मक निर्धारण
।।।) निम्नलिखित प्रस्तावित क्षेत्रों में सतत् निर्धारण-

क. गृह दत्तकार्य/कक्षा दत्तकार्य
ख. कक्षा प्रतिक्रिया/मौखिक निर्धारण/प्रश्नोत्तरी
ग. सेमीनार
घ. विचार गोष्ठी
ड़. सामूहिक परिचर्चा
च. सामूहिक कार्यकलाप अधिमानतः ४-५ छात्रों के समूहों में। प्रस्तावित क्षेत्रः

- अन्वेषणात्मक/प्रयोगमूलक प्रोजेक्ट
- कार्य योजना
- सर्वेक्षण
- फील्ड दौरों पर आधारित वर्कशीट पर निर्धारण

योगात्मक परीक्षा वर्षांत में निम्नलिखित अध्यायों से ली जाएगी-

क्र.सं.	अध्याय का नाम
१.	क्या हमारे आस-पास की सामग्री शुद्ध है
२.	परमाणु एवं अणु
३.	परमाणु की संरचना
४.	जीवन की मौलिक इकाई
५.	उत्तक

६. गुरूत्वाकर्षण
७. ध्वनि
८. कार्य और उर्जा
९. हम बीमार क्यों पड़ते हैं
१०. खाद्य संसाधनों में सुधार

प्रश्न पत्र का संशोधित डिजाइन -

क्र०सं०	प्रश्नों का प्रकार	प्रश्नों की संख्या	प्रत्येक प्रश्न के लिए आवंटित अंक	कुल अंक
१	अति लघु उत्तर प्रकार (वी एस ए)	०५	०१	०५
२	लघु उत्तर प्रकार-। (एस ए -।)	०६	०२	१८
३	लघु उत्तर प्रकार- ।। (एस ए ।।)	०६	०३	२७
४	दीर्घ उत्तर प्रकार (एल ए)	०३	०५	१५
५	एम सी क्यू (प्रयोगात्मक कौशल)	०५	०१	१५
	योग	४१		८०

परिशिष्ट-।।

मूल्यांकन योजना-।। सत्र
अक्तुबर २००९ -मार्च २०१०
कक्षा ९वीं गणित

दो रचनात्मक परीक्षा और एक वषांत योगात्मक परीक्षा होगी। भारांक तथा समय सारणी इस प्रकार होगीः

परीक्षा का प्रकार	भारांक	समय सारणी
रचनात्मक निर्धारण -३	१० प्रतिशत	अक्तू.-दिस. २००९
रचनात्मक निर्धारण -४	१० प्रतिशत	जन.-फर. २०१०
योगात्मक निर्धारण-२	४० प्रतिशत	मार्च २०१०
योग	६० प्रतिशत	

रचनात्मक परीक्षाएं निम्नलिखित रूप में होंगी-

१. अपने-अपने अंशकाल के दौरान पढ़ाई गई विषय वस्तु के आधार पर इकाई परीक्षा।
२. लिखित/मौखिक परीक्षा
३. गृह कार्य/कक्षा कार्य
४. वर्कशीट/दत्तकार्य
५. प्रश्नोत्तरी
६. सामूहिक कार्यकलाप/परिचर्चा
७. ३ से ४ छात्रों के समूहों में गणित (प्रोजेक्ट) परियोजना
८. कक्षा ९वीं की कार्यकलाप पुस्तिका में दिए गए गणित कार्यकलाप (प्रयोगिक) अथवा कुछ जो अवधारणाओं से संबंधित है।

योगात्मक परीक्षा निम्नलिखित अध्यायों से वर्ष के अंत में ली जाएगी-

१. अंक प्रणाली
२. बहुपद
३. रेखाएं और कोण
४. त्रिभुज
५. चतुर्भुज
६. समांतर चतुर्भुज और त्रिभुजों का क्षेत्रफल
७. वृत्त
८. सतह क्षेत्रफल और आयतन
९. सांख्यिकी

प्रश्न पत्र का डिजाइन

प्रश्नों का प्रकार	प्रश्नों की संख्या	प्रत्येक प्रश्न के लिए आवंटित अंक	कुल अंक
एम सी क्यू	८ ४	१ २	८ ८=१६
लघु उत्तर प्रकार ।	७	२	१४
लघु उत्तर प्रकार ।।	१०	३	३०
दीर्घ उत्तर प्रकार	५	४	२०
योग	३४		८०

विज्ञान में रचनात्मक निर्धारण में निम्नलिखित शामिल है-

१. लिखित (कागज कलम) परीक्षा के बारे में निर्धारण ।

प्रश्नों (लघु उत्तर, दीर्घ उत्तर, एम सी क्यू इत्यादि) के भिन्न भिन्न प्रकारों को अपेक्षित महत्व दिया जाना है।

प्रश्नों में सभी कठिन स्तर(सरल, औसत, कठिन एवं हॉट्स) शामिल होने चाहिए।

२. सीबीएसई पाठ्यचर्या २००६-२०१० पर आधारित प्रयोगात्मक निर्धारण में निम्नलिखित शामिल होंगे-

छात्रों को पाठ्यचर्या के सभी क्षेत्रों से प्रयोग करने के लिए कहना चाहिए। विषय-निर्धारण निम्नलिखित पर आधारित होने चाहिए।

- अनुभवजन्य स्थिति
- प्रेक्षण
- प्रेक्षण/आंकडों का रिकार्ड
- प्रेक्षण/आंकडों का विश्लेषण
- छात्र द्वारा निकाले गए निष्कर्ष
- प्रयोगात्मक रिकार्ड फाईल
- मौखिक

३. सतत् निर्धारण (मूल्यांकन) निम्नलिखित प्रस्तावित क्षेत्रों में :

क. गृह दत्तकार्य/कक्षा दत्तकार्य

निम्नलिखित को अपेक्षित महत्व दिया जाना चाहिए-

- निरंतरता
- स्वच्छता
- प्रस्तुतीकरण
- शुद्धता

ख. कक्षा प्रतिक्रिया में शामिल किया जा सकता है-

- मौखिक प्रश्न पूछना
- प्रश्नोत्तरी
- वर्कशीट

क्रम.संख्या	निर्धारण पद्धति	निर्धारण के क्षेत्र
१.	**मौखिक प्रश्न पूछना** प्रसंग की समझ का निर्धारण करने के लिए मौखिक प्रश्न	श्रवण कौशल अभिव्यक्ति की स्पष्टता अवधारणाओं की स्पष्टता सम्प्रेषण कौशल
२.	**प्रश्नोत्तरी** कक्षा छात्रों को समूहों में बांटा जाता है और समूह के छात्रों का निर्धारण करने के लिए प्रसंग से संबधित प्रश्न पूछे जाते हैं।	चिंतन कौशल सतर्कता समय प्रबंधन ज्ञान का अनुप्रयोग तार्कित कौशल प्रश्नोत्तरी की कला
३.	**वर्कशीट** कक्षा के छात्रों का निर्धारण करने के लिए वर्कशीटों का प्रयोग	बोध निरंतरता ज्ञान का अनुप्रयोग एकाग्रता

ग. सेमीनार

प्रसंग को अनुसंधान/अध्ययन के लिए आठ से दस छात्रों में विभाजित किया जाए और इसे सभी छात्रों के लिए प्रदर्शित किया जाए। उदाहरणार्थ उप प्रसंगों में विभाजित किया जा सकता है-

१. परिचय
२. फसल विविधता सुधार
३. फसल उत्पादन प्रबंधन
४. फसल संरक्षण प्रबंधन

निर्धारण के क्षेत्र

- प्रसंग के बारे में अनुसंधान करने की क्षमता
- विषय वस्तु ज्ञान का अर्जन
- जन संबोधन
- मौखिक अभिव्यक्ति
- आई सी टी कौशल
- नेतृत्व गुण

पाठ्यचर्या पर आधारित प्रस्तावित विषय

- पशु पालन
- रोग और उनके कारण
- ऊर्जा के स्रोत और ऊर्जा संकट पर काबु पाना
- आर्किमीडीज सिद्धांत का उपयोग
- दैनिक जीवन में शारीरिक एवं रासायनिक परिवर्तन
- मिश्रणों का पृथक्करण-तकनीकें

घ. विचार गोष्ठी

छात्रों को उनकी पसंद के प्रसंगों पर दस्तावेज प्रस्तुत करने के लिए कहा जा सकता है।

निर्धारण के क्षेत्र-

- विषय-वस्तु की गहनता
- विषय-वस्तु का प्रस्तुतीकरण
- श्रव्य-दृश्य उपकरण का प्रयोग
- प्रसंग की समझ

पाठ्यचर्या पर आधारित/पाठ्यचर्या से संबंधित प्रस्तावित प्रसंग

- रोगों से बचाव के लिए स्वच्छता
- बचाव उपचार से उत्तम है
- अल्ट्रासांउड के उपयोग
- दबाव-दैनिक जीवन में इसके उपयोग
- धातुओं का रासायनिक वर्गीकरण
- परमाणविक मॉडल

ड. सामूहिक परिचर्चा

दस छात्रों के एक समूह को विचार विमर्श के लिए एक प्रसंग दिया जा सकता है

- छात्रों को अपना समूह नेता एक मध्यस्थ तथा एक रिकार्डर चुनना
- उनकी भूमिकाएं स्पष्ट करना
- परिचर्चा के लिए प्रसंग देना

<u>समूह नेता</u> को सुनिश्चित करना है कि सभी छात्र सामूहिक परिचर्चा में भाग लेते है।

<u>मध्यस्थ</u> को सुनिश्चित करना है कि कोई मिश्रित वार्ता नहीं होती है और दो छात्र एक साथ नही बोलते है तथा सभी बोलने वालों को धैर्य से सुनते हैं।

<u>रिकार्डर (अंकित)</u> को अपने स्वयं सहित समूह में सभी छात्रों द्वारा की गई टिप्पणी को रिकार्ड करना है।

निर्धारण के क्षेत्र

- दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का साहस
- सामूहिक कार्य
- अपने समकक्षों का आदर
- विषय-वस्तु का ज्ञान
- उपयुक्त हाव-भाव
- सम्प्रेषण कौशल
- श्रवण कौशल

प्रस्तावित प्रसंग- पाठ्यचर्या पर आधारित अथवा पाठ्यचर्या से संबंधित

- विश्वव्यापी तापन और उसका असर
- निम्नलिखित के बारे में समुदाय के सदस्यों में जागरूकता लाने के लिए छात्रों की भूमिकाः
    - स्वच्छता का महत्व
    - बिजली और पानी की बचत
    - प्रतिरक्षण का महत्व

- एक पदार्थ को उस पर कार्य करने वाले बल की अनुपस्थिति में विस्थापित करना।
- दैनिक जीवन की परिस्थितियों में ऊर्जा रूपांतरण
- रासायनिक संयोजन के नियम
- कोलाइडों का उपयोग

च. सामूहिक कार्यकलाप

सामूहिक कार्यकलाप में निम्नलिखित शामिल हैं-

१. प्रोजेक्ट

छात्रों को अन्वेषणात्मक/प्रयोगमूलक प्रोजेक्ट करने के लिए कहा जाए -

अन्वेषणात्मक प्रोजेक्टों में शामिल हैंः

- आंकडों का संग्रहण
- आंकडों का निर्वचन एवं विश्लेषण
- प्रेक्षण
- निष्कर्ष तथा अनुमान

निर्धारण के क्षेत्र

- जिज्ञासा
- प्रेक्षणीय कौशल
- चिंतन कौशल (तार्किक, विवेकी)
- विश्लेषणात्मक
- ज्ञान का अनुप्रयोग
- बोध एवं समझ (मौखिक परीक्षा)
- निष्कर्ष निकालना

पाठ्यचर्या पर आधारित प्रस्तावित प्रसंग

- संसाधनों का संरक्षण
- उत्प्लावक बल को प्रभावित करने वाले पहलू
- इलाके में मच्छरों के कारण रोगों का फैलना
- भूमि उर्वरता

प्रयोगमूलक प्रोजेक्टों में शामिल हैः

- समस्या को पहचानना
- प्ररिकल्पना करना
- परीक्षण/प्रयोग करना
- प्रेक्षण
- विश्लेषण एवं निर्वचन
- निष्कर्ष तथा अनुमान
- एक सिद्धांत तैयार करना

निर्धारण के क्षेत्र

- जिज्ञासा

- प्रेक्षण कौशल (तार्किक, विवेकी)
- विश्लेषणात्मक
- ज्ञान का अनुप्रयोग
- बोध एवं समझ (मौखिक परीक्षा)
- परिकलन कौशल
- निष्कर्ष निकालना
- प्रयोगमूलक कौशल

पाठ्यचर्या पर आधारित प्रस्तावित प्रसंग

- वनस्पतियों का प्रयोग करते हुए प्रवर्तन
- अमिश्रणीय द्रवों की सघनता
- कम्पायमान पदार्थ ध्वनि उत्पन्न करते हैं
- अग्रस्थ विभज्योतक की स्थिति
- दैनिक जीवन में (जैसे- साबुन, लोशन आदि) आवश्यक भिन्न-भिन्न नमूनों में पी एच का निर्धारण
- पेपर क्रोमैटोग्राफी का प्रयोग करते हुए पदार्थ का पृथक्करण

२. कार्य योजना

एक कार्य योजना तैयार करने के लिए एक कक्षा के छात्रों को ५-६ समूहों में विभाजित करना है।

कार्य योजना में एक समस्या की पहचान करना सम्मिलित है और हल ढूंढने के लिए योजना बनाना।

छात्रों को-

- समस्या की पहचान करना।
- समस्या के कारणों का अध्ययन करना
- समस्या से संबद्ध लोगों (स्टेकहोल्डर) के साथ मेल मिलाप करना
- निम्नलिखित के रूप में समस्या का श्रेणीकरण करना-
    - आकार, महत्व
    - लोगों पर प्रभाव
    - समुदाय पर असर

- समस्या का हल ढूंढने के लिए योजना बनाना। योजना में सम्मिलित करना है-
    - लोगों से मिलना
    - लोगों को परामर्श देना
    - उन लोगों/प्राधिकारियों की सूची बनाना जो समस्या का हल ढूंढने में सहायता कर सकते हैं।
    - स्थापित समस्या पर चर्चा करने के लिए प्राधिकारियों से परिनियुक्ति लेना और उनकी सहायता लेना।
    - समस्या के हल के बारे में एक अनुवर्ती कार्रवाई

कार्य को छात्रों में विभाजित करना अथवा इकाई के रूप में एक समूह में सभी कार्य विभाजित करना।

समूहवार अथवा छात्रवार निर्धारण किया जा सकता है
निर्धारण के क्षेत्र-

- एक समस्या की पहचान करना
- समुदाय के लिए चिंता
- सामूहिक कार्य
- समस्या का विश्लेषण
- छात्रों द्वारा रणनीति की योजना बनाना
- आत्म विश्वास
- संबोधन कौशल
- लोगों/पर्यावरण के लिए चिंता पर विचार करने की अनुवर्ती कार्रवाई

पाठ्यचर्या से संबंधित प्रस्तावित प्रसंग-

- किशोरों में धूम्रपान की तुलना में स्वास्थ्य विद्यालयों के नजदीक सिगरेट की बिक्री
- विद्यालयों में तथा उसके आस-पास स्वच्छता
- भवनों में पानी का रिसाव
- पाइपों में पानी रिसना
- बिजली की क्षति
- कूलरों में पानी का अवरोध
- सांसर्गिक/संक्रामक रोगों पर नियंत्रण

३. सर्वेक्षण -समूह में अध्ययन के संगत प्रसंग के बारे में सूचना एकत्र करना
छात्रवार अथवा समूहवार निर्धारण क्रिया जा सकता है।

निर्धारण के क्षेत्र-

- जिज्ञासा
- संवाद-विषय कौशल
- जन सम्पर्क
- आई सी टी कौशल
- आंकड़ें संग्रहण
- विश्लेषणात्मक कौशल

सामान्य जागरूकता (विज्ञान से संबंधित) जैसे प्रस्तावित प्रसंग

- इलाके में कूडा-कचरा संग्रहण इलाके/समुदाय में रोगों का प्रचलन

- भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में जल संदूषण
- बिजली का उपयोग/दुरूपयोग

परिशिष्ट-IV

गणित में रचनात्मक निर्धारण हेतु निम्नलिखित सम्मिलित होंगे-

१. इकाई परीक्षा-

ये परिक्षाएं एक विशिष्ट अवधि में अध्ययन की गई इकाईयों के एक समूह अथवा एक एकल इकाई पर आधारित हो सकती हैं। एक परीक्षा में एक अथवा दो पीरियडों की अवधि के (१५-२०) प्रश्न हो सकते हैं। इसमें जो शामिल हो सकते हैं वे हैं-

क. बहुप्रयोजन प्रकार के प्रश्न
ख. रिक्त स्थान भरना
ग. लधु उत्तरीय के प्रश्न जो इकाईयों के बोध की परीक्षा करते है।
घ. एक/दो दीर्घ उत्तरात्मक के प्रश्न हो सकते हैं जो कुछ अवधारणाओं के
अनुप्रयोग की परीक्षा करते हैं।

२. मौखिक परीक्षा-

छोटे प्रश्न निम्नलिखित की जांच करते हैं-

क. इकाईयों में शामिल सूत्रों का ज्ञान
ख. प्रसंगों में शामिल समस्याओं की संख्यात्मक क्षमता
ग. शामिल चरणों में तर्कसंगत तर्क
घ. अवधारणाओं की स्पष्टता

३. गृहकार्य की जांच करना-

छात्रों की जांच की निम्नलिखित के बारे में की जा सकती है-

क. गृहकार्य करने में नियमितता
ख. शिक्षक द्वारा इसकी जांच की जाए और जो भाग सही रूप में नहीं
किए गए हों, उन्हें पुनः कराना (अनुवर्ती)।
ग. स्वच्छता

४. कक्षाकार्य

क्या छात्र-
क. कक्षा में एकाग्र हैं
ख. शिक्षकों द्वारा कक्षा में पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देते हैं
ग. कक्षा में सभी छात्रों तथा शिक्षकों के साथ बातचीत करते हैं
घ. कक्षा में पढाई गई अवधारणाओं को ठीक से नोट करते हैं और अगले दिन के
कार्य के अनुसार तैयार करते हैं।

५. वर्कशीट/दत्तकार्य

निम्नलिखित की जांच करने के लिए छात्रों को कक्षा में पढाए गए प्रसंगों से संबंधित भिन्न भिन्न प्रसंगों पर वर्कशीट/दतकार्य दिया जा सकता है:

- बोध
- नियमितता
- अवधारणा की समझ
- ज्ञान का अनुप्रयोग

६. प्रश्नोत्तरी

निम्नलिखित के बारे में प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया जा सकता है

क. अवधारणाओं का बोध
ख. ज्ञान का अनुप्रयोग
ग. तर्क कौशल
घ. विषय से संबंधित ऐतिहासिक घटनाओं का ज्ञान

प्रश्नोत्तरी के लिए प्रसंगों में से कुछ निम्नलिखित हो सकते हैं-

- विभिन्न प्रसंगों पर भारतीय गणितज्ञों का योगदान
- इत्यादि का इतिहास

१. प्रोजेक्ट कार्य

इसे निम्नलिखित रूपों में से किसी भी रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है:

क. लिखित प्रोजेक्ट (परियोजना) रिपोर्ट
ख. चार्ट/मॉडल
ग. पॉवर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण
घ. सर्वेक्षण विश्लेषण

प्रोजेक्ट का मूल्यांकन निम्नलिखित के आधार पर किया जा सकता है।

- प्रोजेक्ट मूलाधार
- जिज्ञासा, प्रेक्षण कौशल, चिंतन कौशल, विश्लेषणात्मक कौशल
- ज्ञान का अनुप्रयोग
- निष्कर्ष निकालना

- शैली में प्रस्तुतीकरण

कुछ प्रस्तावित प्रोजेक्ट नियमानुसार हैं-

II. एक क्रिकेट मैच में रूचिकर अवस्थाएं

इसमें दो टीमों का निम्नलिखित प्रदर्शन शामिल है-

क. प्रति ओवर रन दर
ख. दो टीमों द्वारा प्रथम १०, २० .....५० ओवर में प्राप्त रन
ग. गेंदबाजों द्वारा प्रति ओवर दिए गए रन और ली गई विकेट

पूरी सूचना निम्नानुसार विस्तृत रूप में प्रस्तुत करना-

- लिखित रूप में
- सचित्र रूप में-रेखा चार्ट
- सारणीबद्ध रूप में- गेंदबाजी पैटर्न बल्लेबाजी पैटर्न इत्यादि में तुलना।

III. गणित शब्दावली के साथ एक वर्ग पहेली तैयार करना।

IV . का इतिहास

V. भारतीय गणितज्ञों का जीवनवृत एवं योगदान जैसे-

  - आर्यभट्ट
  - महावीराचार्य
  - भास्कराचार्य इत्यादि

VI . नजदीकी विपणन केन्द्र में भिन्न-भिन्न प्रकार की दुकानों की संख्या क. .... ख ....और इनकी प्रर्याप्तता

VII ....

VIII . सर्वेक्षण प्रकार के प्रोजेक्ट (भिन्न-भिन्न उद्योगों के फील्ड दौरे शामिल हैं)

सतत
एवं
व्यापक
मूल्यांकन

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन क्या है?
(सी.सी.ई.)

- विकास के शैक्षिक और सह-शैक्षिक प्रभाव क्षेत्रों के नियमित निर्धारण द्वारा छात्र की सम्पूर्णतावादी पार्श्विका उपलब्ध कराने की प्रक्रिया है।
- इस योजना का लक्ष्य मूल्यांकन को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाना है।
- योजना छात्रों के व्यक्तित्व के सर्वतोमुखी विकास पर केन्द्रित है।
- योजना अधिगम अंतरों के निदान द्वारा प्रचलित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सुधार की ओर ध्यान देती है और सुधारक तथा समृद्ध इनपुट प्रस्तुत करती है।
- सी सी ई योजना परीक्षा से प्रभावी शिक्षा की ओर एक प्रतिमान बदलाव लाएगी।

सी.सी.ई. में 'सतत' शब्द से क्या तात्पर्य है?

- यह निर्धारण में नियमितता और निरंतरता पर बल देता है।
- 'सतत' शब्द का तात्पर्य निर्धारण को शिक्षण तथा अधिगम की प्रक्रिया के साथ पूर्णतया एकीकृत करना है।
- शब्द का अर्थ छात्रों को सहयोग देते हुए अधिगम का स्तर बढाने के लिए अधिगम अंतरों का निदान करना और उपचारी उपाय प्रदान करना है ताकि वे अपने कौशलों का विकास/सुधार कर सकें।

सी.सी.ई. में 'व्यापक' शब्द से क्या तात्पर्य है?

- इसमें ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा मनोप्रेरक प्रभाव क्षेत्रों सहित छात्र का सम्पूर्णतावादी विकास का निर्धारण शामिल है।
- शब्द में छात्रों के निर्धारण हेतु साधनों एवं तकनीकों की विविधता का प्रयोग भी शामिल है।

शैक्षिक और सह-शैक्षिक शब्दों से क्या तात्पर्य है?

- शैक्षिक शब्द का संबंध उन पहलुओं से है जो बुद्धि अथवा दिमाग से संबंधित है। इसमें पाठ्यचर्चा विषयों, दत्तकार्यो, प्रोजेक्ट कार्य, प्रयोगात्मक तथा मौखिक कार्य इत्यादि में छात्रों का निर्धारण शामिल है।
- सह-शैक्षिक शब्द का संबंध उन पहलुओं से है जो हस्त और हृदय से संबंधित है। इनमें मनोप्रेरक कौशल, शारीरिक विकास, जीवन कौशल, मनोवृति, मूल्य, रूचि तथा पाठ्येयतर गतिविधियों में सहभागिता शामिल है।

रचनात्मक निर्धारण क्या है?

- जोखिम रहित और अनुकूल वातावरण में छात्र की प्रगति को सतत रूप से अनुवीक्षण करने के लिए एक शिक्षक द्वारा प्रयोग की जाने वाली एक प्रक्रिया है।
- यह नैदानिक एंव उपचारी है।
- यह छात्र को स्वाध्ययन में सक्रिय सहभागिता के लिए मंच प्रदान करता है।
- यह उपचारी हस्तक्षेपों के लिए छात्रों तथा शिक्षकों को प्रभावी प्रतिपुष्टि प्रदान करता है जिससे अधिगम तथा योग्यता में बढोतरी होती है।
- दत्तकार्य तथा प्रोजेक्ट जैसे कुछ उदाहरण रचनात्मक निर्धारण में शामिल है।

दत्तकार्यो में निर्धारण छात्रों की कैसे मदद कर सकता है?

- एक दत्तकार्य का मूलभूत उद्देश्य छात्र के अधिगम में सुधार करना है।
- एक दत्तकार्य के निर्धारण के लिए समझ, समय निष्ठता और स्वच्छता, सम्पूर्णता सर्जनात्मकता आदि के स्तर जैसे पूर्व निश्चित मापदण्डों को आवश्यक महत्व दिया जाता है।
- दत्तकार्य के उद्देश्य और विशिष्ट विषयवस्तु इकाई के क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए, उसे अत्यंत सावधानी से तैयार किया जाता है।

प्रोजेक्ट क्या है? प्रोजेक्टों में निर्धारण छात्रों की कैसे मदद करता है?

- प्रोजेक्ट एक नियत कार्य है जो छात्रों में मूल समझ, व्यावहारिक कौशल, दुरूस्त रूचि और वांछित मनोवृति का विकास करने के लिए एक व्यक्ति की अथवा एक समूह को दिया जाता है।
- नेतृत्व, सहयोग, उपायकुशलता, सम्प्रेषण कौशल, संगठनात्मक कौशल आदि जैसे व्यक्तिगत और सामाजिक गुणों को सामूहिक प्राजेक्टों के द्वारा आसानी से निर्धारित किया जा सकता है।
- प्राजेक्टों को निर्धारण करने के लिए प्रस्तुतीकरण, तकनीकी योग्यता, सर्जनात्मक ग्राहयता और ज्ञान के स्तर जैसे मापदण्डों का प्रयोग किया जाता है।

योगात्मक निर्धारण क्या है?

- यह निर्धारण, शिक्षण पाठ्यक्रम के अंत में किया जाता है।
- यह एक छात्र ने कितना सीखा है उसका मूल्यांकन/उल्लेख करता है।
- इसका प्रयोग सामान्यतया प्रमाणन उद्देश्य के लिए किया जाता है।

सी सी ई योजना छात्रों को कैसे सहयोग करेगी?

- वर्ष के अंत में केवल एक बार होने वाली परीक्षा में हुए निर्धारण से उत्पन्न चिंता एवं तनाव का कम करेगी।
- अधिगम अंतरालों और उपचारी हस्तक्षेप का यथा समय निदान करने के कारण अधिगम का उच्चतर स्तर प्राप्त होगा।
- यह छात्रों की उनके व्यक्तित्व के भिन्न- भिन्न प्रभाव क्षेत्रों के रूप में छात्रों का सम्पूर्ण विकास करने में सहायता करेगी।
- यह अधिगम की आवश्यकता के स्थान पर अधिगम के प्रति लगाव/प्रेम को केन्द्रित करेगी।

जीवन कौशल क्या है?

- जीवन कौशल वे क्षमताएं है, जिन्हें छात्रों को विकसित करने की आवश्यकता है जो लाभदायक तथा संतोषजनक जीवन जीने में सफल होने में सहायता करेगी।
- विकासशील और कार्यकुशल जीवन कौशल छात्रों के व्यक्तिगत और सामाजिक गुणों में सुधार के लिए उनकी मदद करेंगे।
- इन गुणों में आत्म सम्मान सम्प्रेषण विश्वास अनुकम्पा आदर तथा परानुभूति और सर्जनात्मक चिंतन शामिल है।

जीवन कौशलों की कौन सी श्रेणियों का निर्धारण कक्षा ९वीं और १०वीं में किया जाना है?

निम्नलिखित तीन विस्तृत श्रेणियों का निर्धारण किया जाना है-

- चिंतन कौशल
- सामाजिक कौशल
- भावनात्मक कौशल

जीवन कौशल का निर्धारण कैसे किया जा सकता है?

- विशिष्ट सूचकों की अनुपस्थिति अथवा उपस्थिति के अवलोकन द्वारा अर्थातः चिंतन कौशल के मामले में छात्र निम्नलिखित योग्यता का प्रदर्शन करते है-
  - मूल एवं कल्पनात्मक प्रश्न उठाना
  - नये विचार उत्पन्न करना
  - नये विचारों का निर्माण करना

सामाजिक कौशलों तथा भावनात्मक कौशलों में दृश्य संकेतक क्या है?

- दूसरों के साथ आगे बढना
- प्रभावी ढंग से सम्प्रेषित करना
- दूसरों के दृष्टिकोणों को सकारात्मक रूप से लेना

भावनात्मक कौशलों की स्थिति में छात्रों को निम्नलिखित योग्यता का प्रदर्शन करना चाहिए

- अपनी ताकत और कमजोरियों को पहचानना
- परिणामों की जानकारी के साथ भावनाओं के बारे में प्रतिक्रिया।
- स्वयं पर तनाव के कारणों और प्रभावों को पहचानना ।
- अपने स्वयं के साथ निश्चित रहना।

मनोवृतियॉं और मूल्य क्या है? एक व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में इन्हें महत्वपूर्ण पहलू क्यों माना जाता है?

- मनोवृतियॉं एक निश्चित प्रोत्साहन (विचार, स्थिति) के बारे प्रतिक्रिया दिखाने के लिए व्यक्ति की अभिवृति अथवा प्रवृति को प्रतिविम्बित करती है।
- मूल्य विचार और धारणाएं है जिसे कोई विशेष रूप से धारित किये रहता है उदाहरणार्थ परानुभूति प्रदर्शित करना।
- सार्वभौम नागरिक बनने में छात्रों की सहायता के लिए उत्तरदायी शिक्षक के रूप में हमें न केवल अच्छे मूल्य मन में बैठना अनिवार्य है बल्कि छात्रों में सकारात्मक दृष्टिकोण भी विकसित करना है।

मनोवृति और मूल्यों का निर्धारण कैस किया जा सकता है?

दिशानिर्देशों में प्रस्तावित अनुसार उपख्यान संबंधी रिकार्ड, प्रेक्षण आदि जैसे साधनों की विविधता का प्रयोग करते हुए विशिष्ट सूचकों की उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति के माध्यम से निर्धारण । इनमें से कुछ निम्नलिखित हो सकते हैं -

- कक्षा के अंदर और बाहर हर समय शिष्टाचार तथा आदर प्रदर्शित करना।
- आदर और शिष्टाचार योग्यता, धार्मिक विश्वास, लिंग संस्कृति आदि में सहपाठियों के बीच मतभेदों के प्रति संवेदनशील होना है।
- विद्यालय कार्यक्रमों के लिए स्वंयसेवी बनना और उनमें शामिल होना।
- पर्यावरण के सुधार की दिशा में कदम उठाना और कार्यकलापों की योजना बनाना और संचालित करना।
- सौम्य, अनुकूल तथा उत्तरदायी आचरण/मनोवृति का प्रदर्शन करना।

सह-पाठ्यक्रम कार्यकलापों में सहभागिता और उपलब्धि को कैसे निर्धारण किया जा सकता है?

दिशानिर्देशों में प्रस्तावित अनुसार साधनों की एक विभिन्नता का प्रयोग करते हुए विशिष्ट सूचकों की उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति के माध्यम से निर्धारण । इनमें से कुछ निम्नलिखित हो सकते है -

- अंतर विद्यालय/राज्य/राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय/ स्तरों पर विद्यालय में साहित्य एवं रचनात्मक कार्यकलापों में सक्रिय रूप से भाग लेना।
- वाद-विवाद, कविता पाठ, बुकक्लब आदि जैसे विभिन्न साहित्यिक प्रतियोगिताओं की योजना बनाने और संचालन करने के लिए पहल करना।
- भिन्न-भिन्न प्रतियोगिताओं में दूसरों को प्रेरित करने और विद्यालय/समाज के एक बड़े हिस्से को शामिल करने में सक्षम होना।
- एक विशेष कलाकृति के प्रति गहन रूचि और अभिरूचि दिखाना।

स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा में सहभागिता का निर्धारण कैसे किया जा सकता है?

दिशानिर्देशों में प्रस्तावित अनुसार साधनों की एक विभिन्नता का प्रयोग करते हुए विशिष्ट सूचकों की उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति के द्वारा निर्धारण । इनमें से कुछ निम्नलिखित हो सकते हैं -

- हाथ-आंख के अच्छे समन्वय का प्रदर्शन करना : संवेदी बोध के प्रति शीघ्रता से प्रतिक्रिया करने की क्षमता। उदाहरणार्थ, क्रिकेट में क्षेत्ररक्षण और पकड़, फुटबाल, हॉकी में पास देना और लेना।
- खेलभावना का प्रदर्शन करना।
- स्वस्थ्य टीम और विद्यालयी मनोभाव प्रकट करना।
- विश्लेषणात्मक अभिरूचि प्रदर्शित करनाः विशेषरूप से टीम के कप्तान अथवा प्रमुख सदस्य के रूप में सामरिक महत्व की परिस्थितियों के प्रति उपयुक्त रूप से प्रतिक्रिया दिखाने और मूल्यांकन करने की क्षमता।

प्रीत विहार, दिल्ली-११००९२ भारत
दूरभाषः ९१-११-२२५०९२५६-५९, फैक्सः ९१-११-२२५१५८२६
ई-मेल : cbsedli@nda.rsml.net.in, Website: www.cbse.nic.in

जीवन कौशल शिक्षा

और

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन

कक्षा IX और X

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

प्रीत विहार

जीवन कौशल शिक्षा

किशोरावस्था संवृद्धि और विकास की महत्त्वपूर्ण अवस्था है, जिसमें बाल्यावस्था से युवावस्था में कदम रखा जाता है। इस अवस्था में शारीरिक परिवर्तन एवं मानसिक परिपक्वता तीव्र गति से होती है। युवावस्था जीवन का वह चरण होता है, जब एक तरुण अपने परिवार की परिधि से निकलकर अपने संबंधों को विस्तृत करता है एवं अपने समव्यस्कों और शेष जगत से प्रभावित होता है। किशोरावस्था में बुद्धि परिपक्व हो जाती है तथा मानसिक विवेचना की क्षमता बढ़ जाती है। वे अब अमूर्त चिंतन करने, स्पष्ट वक्तव्य देने तथा स्वतंत्र विचारधारा रखने में सक्षम हो जाते हैं। वास्तव में यह समय रचनात्मकता, आदर्शवादिता, सजीवता और दुस्साहस का होता है, परंतु इसी समय वह कई महत्त्वपूर्ण मुद्दों, विशेष रूप से अपने शारीरिक और लैंगिक विषयों में, अपने सहचरों के नकारात्मक दृष्टिकोण के कारण असंतुलित निर्णय लेते हैं तथा नये-नये प्रयोग करते हैं और जोखिम उठाते हैं। इस प्रकार किशोरावस्था जीवन का वह मोड़ है जिसमें उसकी अंतःशक्ति में वृद्धि होती है लेकिन साथ ही वह अत्यधिक संवेदनशील हो जाता है।

किशोर विद्यार्थियों के महत्त्वपूर्ण मुद्दे और चिंताएं

विशिष्टता का विकास

- स्व-जागरूकता से किशोर अपने आपको भली-भांति उन्हें समझते हैं और अपनी वैयक्तिक पहचान बनाते हैं। सूचना और दक्षता की कमी उन्हें अपने सामर्थ्य का प्रभावी ढंग से विकास करने और सकारात्मक छवि तथा उन्नत भविष्य को स्थापित करने से वंचित करती है।

संवेगों पर नियंत्रण

- किशोरों का संवेग शीघ्रता से परिवर्तित होता है, जिसमें क्रोध, निराशा, प्रसन्नता, भय, लज्जा, ग्लानि और प्रेम की भावनाएं होती हैं। प्रायः वे भावात्मक विप्लव को नहीं समझ पाते हैं।

- उनके पास ऐसा सहयोगपूर्ण वातावरण नहीं होता है जिससे वे अपनी भावनाओं को दूसरों से बांट सकें। उन्हें उचित मार्गदर्शन की सुविधा उपलब्ध नहीं है।

संबंध निर्माण

- विकास के क्रम में किशोर अपने माता-पिता, साथियों और विपरीत लिंग वाले सदस्यों के साथ अपने संबंधों को पुनः परिभाषित करते हैं। बड़े लोग उनसे ऊंची अपेक्षाएं रखते हैं और उनकी भावनाओं को नहीं समझते हैं।

- किशोरों को अपने विपरीत लिंगी तथा अन्य साथियों के प्रति सकारात्मक एवं स्वस्थ सामाजिक संबंध स्थापित करना चाहिए। पारस्परिक सम्मान और प्रत्येक संबंध की सामाजिक रूप से परिभाषित सीमाओं के महत्त्व को समझने की आवश्यकता होती है।

साथियों के दबाव का प्रतिरोध

- किशोर अपने साथियों के दबाव का प्रतिरोध करने में कठिनाई महसूस करते हैं। इनमें से कुछ उनके दबाव में आ जाते हैं और परीक्षण करने की ओर आकर्षित हो जाते हैं।

- उग्र स्व-आचरण, गैर-जिम्मेदार व्यवहार और सामर्थ्य के दुरुपयोग से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बर्बाद कर लेते हैं।

- शुरुआत में वे धूम्रपान और हल्के नशीले पदार्थ को जिज्ञासावश लेते हैं, तदन्तर वे इसके आदी हो जाते हैं।

किशोर के मुद्दों के संबंध में सूचना, शिक्षा और सेवा अर्जित करना

- मीडिया के प्रभाव और तेजी से बदल रहे विश्व के परस्पर विरोधी संदेशों के कारण किशोरों के पास कई अनुत्तरित रह जाते हैं।

- किशोरों और माता-पिता के बीच संवादहीनता बहुत चिंता का विषय है।

- अध्यापक भी इन मुद्दों पर निःसंकोच और संवेदनशीलता के साथ चर्चा नहीं कर पाते हैं।

- किशोर अपने ऐसे साथियों के समूह से सूचना प्राप्त करते हैं, जिन्हें पूरी जानकारी नहीं होती है और कुछ उसमें फंस जाते हैं। यदि वे आरटीआई और एसटीआई से पीड़ित हों, तो डर और संकोच उन्हें निवारक तरीकों और चिकित्सीय सहायता प्राप्त करने से रोकते हैं।

सुरक्षित जीवन पद्धति का प्रसारऔर संचार :-

- यौन रूप से सक्रिय किशोरों को कई तरह की स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

- प्रारंभिक कम उम्र में यौन रूप से सक्रिय लड़कियां भी मानसिक और भावनात्मक समस्याओं से ग्रसित हो सकती हैं।

- नशीले पदार्थों के प्रति झुकाव से हिंसा के प्रति आकर्षण बढ़ता है कानून और समाज से टकराव पैदा होता है।

जीवन कौशल को समझना - अध्यापक का दृष्टिकोण

जीवन कौशल की परिभाषा ”ऐसे अनुकूल और सकारात्मक व्यवहार को अपनाना, जिससे कोई व्यक्ति नैमित्तिक जीवन की मांगों और चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपट सके” के रूप में दी गई है (विश्व स्वास्थ्य संगठन)। **‘अनुकूल’** से तात्पर्य है व्यक्ति का लचीला दृष्टिकोण और विभिन्न परिस्थितियों में अपने आपको अनुकूल बनाए रखना। **‘सकारात्मक व्यवहार’** से तात्पर्य है किसी व्यक्ति में दूरदृष्टि हो और वह कठिन परिस्थितियों में भी आशा की किरण देख सके और समाधान ढूंढने के लिए अवसर निकाल सके।

‘आजीविका कौशल’ शब्द या व्यावसायिक/ व्यवसाय कौशल शब्द से तात्पय है क्षमता, संसाधन और अवसर, जिससे कोई व्यक्ति और उसका घर आर्थिक लक्ष्य को प्राप्त करता है और आय पैदा करता है। इस प्रकार जीवन कौशल आजीविका कौशल से भिन्न है।

मुख्य जीवन कौशल

जीवन कौशल में ऐसी मानसिक क्षमता और अंतःवैयक्तिक कौशल शामिल हैं, जिससे व्यक्ति को सूचित निर्णय लेने, समस्याओं को हल करने, आलोचनात्मक और रचनात्मक ढंग से सोचने, प्रभावी संप्रेषण करने, स्वस्थ संबंध बनाने, दूसरों के साथ बल देने और स्वस्थ तथा उत्पादक तरीके से अपने जीवन को चलाने में मदद मिलती है। अनिवार्यतः दो प्रकार के कौशल होते हैं, जिनमें

से जो चिंतन से संबंधित होते हैं, उन्हें **'चिंतन कौशल'** कहा जाता है और जो दूसरों के साथ व्यवहार करने से संबंधित होते हैं, उन्हें **'सामाजिक कौशल'** कहा जाता है। हालांकि चिंतन कौशल व्यक्तिगत स्तर के प्रदर्शन से संबंधित होता है, तथापि सामाजिक कौशल में अंतःवैयक्तिक कौशल शामिल होता है और यह आवश्यक नहीं है कि वह तार्किक चिंतन पर निर्भर हो। यह इन दो प्रकार के कौशलों का ही सम्मिश्रण है कि हमें सकारात्मक व्यवहार और प्रभावी बातचीत के लक्ष्य को प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। **'भावनात्मकता'** से तात्पर्य केवल बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय लेना का कौशल ही नहीं है, अपितु इससे हम दूसरों के दृष्टिकोण से भी सहमत होते हैं। ऐसा करने के लिए पहले शब्द महत्त्वपूर्ण होता है। इस प्रकार स्व-प्रबंधन एक महत्त्वपूर्ण कौशल होता है, जिसमें हम भावनाओं, संवेगों, तनावों के साथ तालमेल बिठा सकते हैं और साथियों तथा परिवार के दबावों का प्रतिरोध कर पाते हैं। जैसाकि बताया जाता है, युवाओं को चिंतन कौशल और सामाजिक कौशल दोनों की आवश्यकता होती है ताकि वे संवेदनशील मुद्दों पर सहमति बना सकें और उसकी पैरवी कर सकें।

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्धारित १० मुख्य जीवन कौशल हैं:

1. स्व-जागरूकता
2. तदानुभूति
3. आलोचनात्मक चिंतन
4. रचनात्मक चिंतन
5. निर्णय लेने की क्षमता
6. समस्या निदान
7. प्रभावी संप्रेषण
8. अंतःवैयक्तिक संबंध
9. तनाव से निपटना
10. संवेगों पर नियंत्रण

- **स्व-जागरूकता** : स्व-जागरूकता में स्वयं की, अपने चरित्र, अपनी शक्ति और अपनी कमजोरी, अपनी पसंद और नापसंद की पहचान करना शामिल है। स्व-जागरूकता का विकास करने से हमें यह जानने में मदद मिलती है कि कब हम तनाव में हैं या दबाव महसूस कर रहे हैं। यह प्रायः पूर्व अपेक्षित है, जिससे हम प्रभावी संप्रेषण कर सकें, अंतःवैयक्तिक संबंध बना सकें और अन्य लोगों के साथ तदानुभूति विकसित कर सकें।

- **तदानुभूति** : हम अपने प्रियजनों और बड़े समाज के साथ सफल संबंध बनाते हैं। इससे हमें अन्य लोगों की आवश्यकताओं, इच्छाओं और भावनाओं को समझने और सम्मान करने की आवश्यकता होती है। तदानुभूति एक ऐसी क्षमता है, जिससे हम इस बात की कल्पना करते हैं कि अन्य लोगों का दृष्टिकोण क्या है? बिना तदानुभूति के दूसरों के साथ हमारा संप्रेषण इकतरफा होगा। इसमें सबसे बुरी बात यह होगी कि हम अपने स्वार्थ के लिए बनावटी व्यवहार करेंगे और समस्याओं से घिरे रहेंगे। इससे संसार में कोई भी व्यक्ति अछूता नहीं है। इसी स्वार्थ के कारण हम माता-पिता, भाई-बहन एवं अन्य रिश्तेदारों, सहपाठियों, मित्रों और पड़ोसियों के साथ संबंध बनाते हुए बड़े होते हैं।

  जब हम अपने आपको और दूसरों को भली भांति समझते हैं, तब हम अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं को अच्छी तरह प्रस्तुत कर सकते हैं। तब हम यह जानने में सक्षम होते हैं कि हम दूसरों को क्या बताना चाह रहे हैं। हमारे भाव और विचार किस तरह प्रस्तुत हैं तथा दूसरों की भावनाओं को आहत किए बिना संवेदनशील मुद्दों को सुलझा लें। वहीं दूसरी तरफ अन्य लोगों से समर्थन प्राप्त कर लेते हें तथा उनके विश्वास को जीत लेते हैं।

  तदानुभूति से हमें ऐसे व्यक्ति को स्वीकार करने में मदद मिलती है, जो हमसे बिल्कुल भिन्न हों। इससे हमारे सामाजिक व्यवहार में सुधार होता है। विशेष रूप से जहां जातीय और सांस्कृतिक वातावरण भिन्न हो।

  तदानुभूति से हम ऐसे जरूरतमंद लोगों की सहायता कर पाते या एड्स से पीड़ित या मानसिक रोगियों के साथ सहनशीलता बरत पाते हैं, जिसे कई ऐसे लोगों द्वारा एक कलंक समझा जाता है, जिन पर वे सहायता के लिए निर्भर होते हैं।

- **आलोचनात्मक चिंतन :** यह एक ऐसी क्षमता होती है, जिससे वस्तुनिष्ठ तरीके से सूचना और अनुभव का विश्लेषण किया जा सकता है। आलोचनात्मक चिंतन के द्वारा हम प्रभावित करने वाली मनोवृत्ति और व्यवहार, जीवन मूल्य साथियों का दबाव तथा मीड़िया के प्रभाव को पहचानने और समझने में सहायक हैं, जो हमारे आचार-व्यवहार को प्रभावित करता है।

- **रचनात्मक चिंतन :** यह चीजों को देखने और करने का आदर्श तरीका होता है। इसके चार संघटक होते हैं - प्रवाह (नए विचारों का सृजन), लचीलापन (अपनी सोच को आसानी से बदलना), मौलिकता (कुछ नया सोचना) और (अन्य लोगों के विचारों) का विस्तार ।

- **निर्णय लेने की क्षमताः** इससे हमें अपने जीवन के बारे में रचनात्मक निर्णय लेने में मदद मिलती है। इसके स्वास्थ्य संबंधी प्रभाव भी होते हैं। इससे लोग यह भी सीख सकते हैं कि विभिन्न विकल्पों के स्वस्थ मूल्यांकन के संबंध में अपनी कार्रवाई के बारे में कैसे तत्परता से निर्णय लिया जाए और इन विभिन्न निर्णयों का क्या प्रभाव पड़ने की संभावना है।

- **समस्या का निदान :** इससे हम अपने जीवन में समस्याओं का रचनात्मक तरीके से हल कर पाते हैं। जो महत्त्वपूर्ण समस्याएं हल नहीं हो पाती हैं, उनसे मानसिक दबाव होता है और इससे शारीरिक तनाव जुड़ जाता है।

- **अंतःपारस्परिक संबंध :** इस कौशल से हमें उन लोगों के साथ सकारात्मक संबंध बनाने में सहायता मिलती है, जिनसे हम संपर्क करते हैं। इससे हम ऐसे मित्रतापूर्ण संबंध बनाते हैं और बनाए रखते हैं, जो हमारी मानसिक और सामाजिक भलाई के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं। इसका यह भी आशय है कि हम परिवार के सदस्यों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखते हैं, जो सामाजिक सहयोग का महत्त्वपूर्ण स्रोत है। इसका यह भी अर्थ है कि इससे हम संबंधों को बगैर किसी को आहत किए समाप्त भी कर देते हैं।

- **प्रभावी संप्रेषण :** इससे तात्पर्य है कि हम मौखिक और अमौखिक दोनों तरीके से अपने आपको इस प्रकार व्यक्त कर पाते हैं कि वह हमारी संस्कृति और परिस्थितियों के अनुरूप हो। इससे तात्पर्य है कि हम अपनी राय और इच्छाओं को व्यक्त कर सकें और अपनी आवश्यकता और चिंता को भी व्यक्त कर सकें। इसके द्वारा हम आवश्यकता पड़ने पर सलाह और सहायता भी मांग सकते हैं।

- **तनाव से निपटना :** इसका तात्पर्य है हमारे जीवन में तनाव के कारण को पहचानना, यह पहचानना कि इसका क्या दुष्प्रभाव होगा और इस प्रकार से कार्य करना जिससे हम आपको वातावरण से समायोजन कर या जीवनशैली द्वारा तनाव के स्तर पर नियंत्रण रख सकते हैं और यह सीख सकते हैं कि मानसिक शांति कैसे प्राप्त की जाए।

- **संवेगों पर नियंत्रण :** इससे तात्पर्य है अपने और दूसरों के संवेगों को पहचानना, इस बात की जानकारी देना कि संवेग किस प्रकार व्यवहारों कोप्रभावित करता है और यदि हम संवेगों पर समुचित नियंत्रण नहीं रख पाते हैं तो क्रोध और निराशा जैसे तीव्र संवेगों से हमारे स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

आमतौर पर पूछे जाने वाले महत्त्वपूर्ण प्रश्न

(क) विकासशील मस्तिष्क के लिए जीवन कौशल कैसे महत्त्वपूर्ण है?

हम ऐसा देखते हैं कि व्यवहार हमेशा मस्तिष्क के अनुसार कार्य नहीं कर रहा होता है! यह तब होता है जब **"मैं जानता हूं लेकिन कुछ नहीं कर सकता"** की घटनाएं होती हैं। हमें जो कुछ करने की आवश्यकता है, वह है जिम्मेदारी के साथ कार्य करने की क्षमता। जीवन कौशल हमारेज्ञान, मनोवृत्ति और जीवन मूल्यों को वास्तविक योग्यता में प्रतिस्थापित कर सकें।

(ख) जीवन कौशल संबंधी शिक्षा की आवश्यकता क्यों है?

मुख्य बात यह है कि मद्यपान, मादक द्रव्यों का सेवन और अनौपचारिक संबंधों के कारण अब, विद्रोह, स्थिति भ्रम, साथियों का दबाव और जिज्ञासा हमारे व्यवहार को उग्र बनाता है। भावात्मक पीड़ा के सहन करने की क्षमता, संघर्ष, निराशा और भविष्य के बारे में चिंता से मनोवैज्ञानिक दबाव पैदा होते हैं - जिसके कारण हमें अभद्र व्यवहार करने के लिए प्रायः बाध्य होना पड़ता है। जीवन कौशल का प्रशिक्षण युवाओं को जिम्मेदारी से कार्य करने, पहल करने और नियंत्रण में रहने की शक्ति देने के लिए प्रभावी साबित होता है। यह इस कल्पना पर आधारित होता है कि जब युवा दैनिक संघर्ष, तुकहीन, संबंध बनाने और साथियों के दबाव से उपर्युक्त संवेगों से निपट सकते हैं और वे असामाजिक एवं अभद्र व्यवहार से अपेक्षाकृत कम प्रभावित होते हैं।

(ग) जीवन कौशल की आवश्यकता किसको है?

जीवन कौशल कार्यक्रम विद्यालय आधारित कार्यक्रम है, जिसमें अनुकूल शिक्षण वातावरण में जीवन कौशल की शिक्षा दी जाती है। यह कार्यक्रम सभी उम्र के बच्चों और विद्यालयों के किशोरों पर लागू होता है। लेकिन इसमें मुख्य रूप से १०-१८ वर्ष के किशारों को लक्ष्य बनाया जाता है। क्योंकि इस आयु-वर्ग के युवा स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार की समस्याओं के प्रति बहुत संवेदनशील पाए जाते हैं। ये कार्यक्रम स्वास्थ्य के सुधार और भलाई के लिए आयोजित किए जाते हैं और इनके लक्ष्य सभी बच्चे होते हैं।

(घ) ये कौशल कैसे सिखाए जाते हैं?

जीवन कौशल के शिक्षण में प्रयोग की जाने वाली पद्धतियां, सामाजिक शिक्षण के सिद्धांत पर आधारित होती हैं और इस बात पर आधारित होती हैं कि अन्य लोगों के व्यवहार को देखकर और उस व्यवहार के परिणामों से अपने वातावरण से युवा कैसे सीखते हैं?

इसमें चार मूल संघटकों का प्रयोग करके प्रतिभागिता शिक्षण की प्रक्रिया होती हैः

१. व्यावहारिक क्रियाकलाप
२. फीडबैक और उसका प्रभाव
३. समेकन और प्रवर्तन
४. दैनिक जीवन की चुनौतियों का व्यावहारिक अनुप्रयोग

(ड.) प्रबुद्ध शिक्षकों का दृष्टिकोण?

प्रबुद्ध प्रशिक्षण दृष्टिकोण में विद्यालय में प्रत्येक विद्यालय (मुख्य जीवन कौशल दल का गठन) से एक अध्यापक और तीन-चार विद्यार्थी प्रतिनिधि होते हैं। ये इन कौशलों को सक्रिय शिक्षण और अंतः विद्यालय प्रशिक्षण कार्यशाला के ६

सत्रों में भाग लेकर सीखते हैं। वे उन्हें इस प्रक्रिया के माध्यम से इन कौशलों में विद्यालय में अपने साथियों को आगे प्रशिक्षित करते हैं। वे फीडबैक, चर्चाओं, प्रशिक्षण सामग्री आदि के लिए मुख्य स्रोतों का अनुपालन करते हैं।

(च) ऐसी विविध पद्धतियां, जिन्हें विद्यार्थियों में जीवन कौशल को बढ़ाने के लिए उपयोग में लाया जा सकता है?

प्रत्येक कार्यशाला को कौशल विशेष में प्रशिक्षण देने के लिए विशेष रूप से तैयार किया जाता है और उसमें निम्नलिखित सभी या कुछ तकनीकी सम्मिलित शामिल होती हैंः

- कक्षा में चर्चा
- विचारावेश
- प्रदर्शन और दिशानिर्देशी व्यवहार
- भूमिका प्रदर्शन
- श्रव्य और दृश्य क्रियाकलाप अर्थात कला, संगीत, थियेटर, नृत्य
- निदानात्मक प्रश्न
- छोटा समूह
- शैक्षिक खेल और प्रेरणा
- समस्या अध्ययन
- कहानी कथन
- वाद-विवाद

जीवन कौशल के अनुप्रयोग में मुख्य कदम

कौशल को परिभाषित करना और बढ़ावा देना

- कौशल क्या हैः लक्ष्य व्यवहार या स्थिति को प्रभावित करने वाला सबसे संगत कौशल; यदि कौशल निर्माण का अभ्यास सफल रहता है तो विद्यार्थी क्या कर पाएंगे?
- कौशल का अनुप्रयोग कैसे किया जा सकते है। इसके लिए सकारात्मक और नकारात्मक उदाहरण तैयार करना।
- मौखिक पूर्वाभ्यास और अभिक्रिया का प्रोत्साहन।
- कौशल क्या है और इसे कैसे किया जाता है, इसके बारे में गलत धारणाओं को सही करना।

कौशल अर्जन और कार्य-निष्पादन को बढ़ावा देना

- ऐसे अवसर मुहैया कराना जिनसे यह देखा जा सके कि जीवन कौशल को प्रभावी ढंग से प्रयोग में लाया जा रहा है।
- दिशा-निर्देश और फीडबैक के जरिये अभ्यास के अवसर मुहैया कराना।
- कार्य-निष्पादन का मूल्यांकन करना।
- उपचारात्मक कार्य के लिए फीडबैक और संस्तुति कराना।

कौशल अनुरक्षण/ सृजन को बढ़ावा देना

- अवसर मुहैया कराना
- स्वयं मूल्यांकन और कौशल समायोजन को बढ़ावा देना

कक्षा में जीवन कौशल का लक्ष्य

शिक्षण पद्धति	विवरण	लाभ	प्रक्रिया
कक्षा में चर्चा (छोटे या बड़े समूह में)	कक्षा अपनी रुचि की समस्या या विषय पर जांच करेगी ताकि उस मुद्दे या कौशल की बेहतर जानकारी के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके, सर्वोत्तम हल निकाला जा सके या समूह के लिए नए विचारों और निर्देशों को विकसित किया जा सके।	विद्यार्थियों को एक-दूसरे से सीखने का अवसर प्रदान करना और समस्याओं के समाधान में एक-दूसरे से मिलकर कार्य करना। विद्यार्थियों को उस विषय की गहरी जानकारी के योग्य बनाना और इसके संबंध में उनकी व्यक्तिगत राय जानना। इससे श्रवण, संकलन और तदानुभूति में कौशल के विकास में सहायता मिलती है।	• यह निर्णय लेना कि चर्चा के लिए बैठने की व्यवस्था कैसे की जाए। • चर्चा के लक्ष्य को निर्धारित करना और इसको स्पष्ट रूप से संप्रेषित करना। • सार्थक और स्पष्ट प्रश्न करना। • चर्चा की प्रगति पर ध्यान देना।
विचारावेश	विद्यार्थी प्रायः दी गई संक्षिप्त अवधि में विषय या प्रश्न विशेष के बारे में अपने व्यापक और विविध विचार सक्रियता से दें। विचारों की मात्रा विचारावेश का मुख्य उद्देश्य है। विचारों का मूल्यांकन करना या उन पर चर्चा करना बाद की बात है।	विद्यार्थियों को तत्काल और लगातार विचार व्यक्त करने देना। विद्यार्थियों को अपनी कल्पना और उत्तर के लिए निर्धारित तरीके में ढील देने में मदद करना। अच्छी चर्चा शुरू करना ताकि कक्षा अपने रचनात्मक विचार दे सके। प्रत्येक विचार के परिणामों का मूल्यांकन करना आवश्यक है या विचारों को कतिपय मापदंडों के अनुसार रखा जाए।	• एक नेता या एक रिकार्डर नामित करें। • मुद्दा या समस्या बताएं और इसके संबंध में उनके विचार जानें। • विद्यार्थी ऐसे कोई भी विचार व्यक्त कर सकते हैं, जो उनके दिमाग में आएं। • जब वे पहले अपने विचार व्यक्त कर रहे हों, तब विचारों पर चर्चा न करें। • विचारों का ऐसे स्थान पर रिकार्ड करें, जहां उन्हें सब देख सकें। • विचारावेश के बाद विचारों की समीक्षा करें और तब उनमें परिवर्धन, विलोपन या उनका वर्गीकरण करें।
भूमिका प्रदर्शन	भूमिका प्रदर्शन एक	व्यवहार कौशल के लिए उत्कृष्ट	• भूमिका प्रदर्शन के लिए

	अनौपचारिक नाटकीकरण है, जिसमें लोग सुझाई गई स्थिति में कार्य करते हैं।	रणनीति तैयार करें। इसमें इस बात का अनुभव करें कि कोई व्यक्ति दूसरों के लिए वास्तविक जीवन में तदानुभूति को बढ़ाकर संभावित स्थितियों में कैसे कार्य कर सकता है और इसमें उनके दृष्टिकोण को देखें और उनकी अपनी भावनाओं और अंतःदृष्टि में वृद्धि करें।	स्थिति का निर्धारण करें। • भूमिका प्रदर्शकों का चयन करें। • भूमिका प्रतिदर्शकों को अनुदेश दें। • भूमिका प्रदर्शन आरंभ करें। • क्या होता है, इस बात पर चर्चा करें।

छोटा समूह	छोटे समूह कार्य के लिए बड़ी कक्षा को छः या उससे कम छोटे-छोटे समूहों में विभाजित करें और कार्य को पूरा करने, कार्य को करने या किसी विषय, समस्या अथवा प्रश्न विशेष पर चर्चा करने के लिए बहुत कम समय दें।	यह उस स्थिति में उपयोगी होता है, जब समूह बड़े हों और समय सीमित हो। विद्यार्थियों के परिणामों को न्यूनतम रखें, विद्यार्थियों को एक-दूसरे को बेहतर रूप से जानने दें और उन संभावनाओं को बढ़ाएं, जिनमें वह इस बात पर विचार कर सकें कि दूसरा कैसे सोचता है। विद्यार्थियों को अपने साथियों की बात सुनने और समझने में मदद करें।	• चर्चा के प्रयोजन और उपलब्ध समय की मात्रा बताएं। • छोटे-छोटे समूह बनाएं। • बैठने की व्यवस्था इस प्रकार करें कि सदस्य एक-दूसरे को आसानी से सुन सकें। • समूह से कहें कि वे अपना अभिलेखी नियुक्त करें। • अंत में अभिलेखी को समूह की चर्चा का विवरण देने को कहें।
खेल और प्रेरणा	विद्यार्थियों को ऐसे क्रियाकलापों के रूप में खेल खेलने दें, जो विषय-वस्तु को पढ़ाने, आलोचनात्मक चिंतन करने और समस्या निदान तथा निर्णय लेने की क्षमता जिनकी समीक्षा की जा सके और जिनको लागू किया जा सके। प्रेरणा ऐसे क्रियाकलाप होते हैं, जिनमें वास्तविक अनुभव जैसी अनुभूति होती है।	खेल और प्रेरणा से मनोविनोद, सक्रिय शिक्षण और कक्षा में स्वस्थ चर्चा को बढ़ावा मिलता है क्योंकि प्रतिभागी अपने विचारों या अपने बिंदुओं को रखने में काफी परिश्रम करते हैं। उन्हें ज्ञान, अभिवृत्ति और कौशल का मिश्रित प्रयोग करना होता है और विद्यार्थियों को उनकी संकल्पनाओं और क्षमताओं को सुरक्षित वातावरण के अनुसार करने दें।	**खेलः** • विद्यार्थियों को यह याद दिलाएं कि क्रियाकलाप मनोविनोद के लिए होते हैं और इसमें इस बात का महत्त्व नहीं होता है कि जीतता कौन है। **प्रेरणाः** • उस समय सर्वोत्तम कार्य करना जब वे तत्काल अपने विचार रख रहे हों और उस पर चर्चा कर रहे हों। • विद्यार्थियों से कहा जाए कि वे इस बात की

			कल्पना करें कि वे एक स्थिति में हैं या क्रियाकलाप के एक निर्धारित खेल को खेलें ताकि उनके अंदर यह भावना आए कि यह दूसरे खेल में सही हो सकती है।
स्थिति का विश्लेषण और समस्या अध्ययन	स्थिति के विश्लेषण संबंधी क्रियाकलापों से विद्यार्थी उसके बारे में सोचते हैं, विश्लेषण करते हैं और उन स्थितियों पर चर्चा करते हैं, जिनका उन्हें सामना करना पड़ सकता है। समस्या अध्ययन वास्तविक जीवन की ऐसी कहानियां होती हैं, जिनमें इस बात का विस्तृत विवरण होता है कि किसी समुदाय, परिवार, विद्यालय, व्यक्ति के साथ क्या घटित हुआ है।	स्थिति के विश्लेषण से विद्यार्थियों को समस्या और कमियों का पता लगाने और सुरक्षित ढंग से परीक्षण समाधानों का पता लगाने दिया जाता है। इसमें साथ-साथ कार्य करने, विचारों का आदान-प्रदान करने और लोगों द्वारा कभी-कभी कुछ चीजों को विभिन्न तरीके से देखने की कला को सीखने का अवसर दिया जाता है। समस्या अध्ययन विचारों और चर्चाओं के लिए एक सशक्त तरीका है। विद्यार्थी उन ताकतों पर विचार करते हैं, जिनमें कोई व्यक्ति या समूह एक तरीके से या दूसरे तरीके से कार्य करता है और तब परिणामों का मूल्यांकन करता है। इस चिंतन प्रक्रिया में सम्मिलित होकर विद्यार्थी अपने निर्णय लेने के कौशल में सुधार कर सकते हैं। समस्या अध्ययन को विशिष्ट क्रियाकलापों से जोड़ा जा सकता है ताकि विद्यार्थी इससे पहले अपनी स्वास्थ्य समस्याओं का सामना कर सकें और उचित प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकें।	• दिशानिर्देशी प्रश्न, चिंतन और चर्चा को बढ़ावा देने के लिए उपयोगी होते हैं। • अनुसमर्थकों को चाहिए कि वे महत्त्वपूर्ण बिंदुओं के संबंध में उकसाने की कोशिश करें और फिर चुप हो जाएं और कुछ 'बड़े' प्रश्न पर सोचने लग जाएं। • स्थिति विश्लेषण और समस्या अध्ययन के लिए पर्याप्त समय की आवश्यकता होती है ताकि उस पर प्रक्रिया की जा सके और रचनात्मक तरीके से सोचा जा सके। • अध्यापक को चाहिए कि वह अनुसमर्थक के रूप में कार्य करे और 'उत्तर' तथा ज्ञान का एकमात्र स्रोत होने की बजाय उनका मार्गदर्शन करे।
वाद-विवाद	वाद-विवाद में कक्षा में कोई समस्या या मुद्दा विशेष रखा जाता है और विद्यार्थियों को समस्या या मुद्दे को हल करना होता है। कक्षा संपूर्ण रूप में या छोटे-छोटे समूहों में वाद-विवाद कर सकती है।	मुद्दा विशेष पर गहराई से और रचनात्मक ढंग से विचार व्यक्त करने का अवसर दिया जाता है। स्वास्थ्य के मुद्दे पर वे अच्छी तरह से बोल सकते हैं। उदाहरणार्थ विद्यार्थी इस विषय पर चर्चा कर सकते हैं कि क्या किसी समाज में सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान	• विद्यार्थियों को इस विषय में अपनी रुचि व्यक्त करने देनी चाहिए कि एक ही विषय पर कई विद्यार्थी न बोलें और कुछ से कहा जाना चाहिए कि वे इस विषय के विरोध में अपने तर्क रखें।

		करने पर रोक लगाई जानी चाहिए। विद्यार्थियों को इस मुद्दे पर अपना पक्ष खुलकर रखने देना चाहिए और उन्हें उच्च चिंतन कौशल के अभ्यास का अवसर दिया जाना चाहिए।	• अपने विषय पर सोचने के लिए विद्यार्थियों को समय दें। • विद्यार्थियों को दूसरे वक्ताओं को बोलने से रोकने न दिया जाए। • यह सुनिश्चित करें कि विद्यार्थी अपने विचार व्यक्त करने और अन्य विद्यार्थियों के विचारों पर वाद-विवाद करने का अनुरोध करें। • कक्षा में नियंत्रण बनाए रखें और विषय पर वाद-विवाद जारी रखें।
कहानी कथन	अनुदेशक या विद्यार्थी समूह को कहानी सुनाएं या उनके लिए कहानी पढ़ें। इसके लिए चित्र, कामिक्स और चित्रकथा, फिल्म स्ट्रिप और स्लाइड मुहैया कराएं। विद्यार्थियों को सोचने के लिए प्रोत्साहित करें और महत्त्वपूर्ण चर्चा (स्वास्थ्य संबंधी) के बिंदुओं या कहानी सुनाए जाने के बाद कहानी के कारण उठे बिंदुओं पर चर्चा करें।	विद्यार्थियों को स्थानीय समस्याओं के बारे में सोचने में मदद की जा सकती है और उनमें आलोचनात्मक चिंतन कौशल का विकास किया जा सकता है। विद्यार्थी अपने रचनात्मक कौशल का प्रयोग कहानी लिखने में कर सकते हैं या एक समूह आपस में कहानी कहने का कार्य कर सकता है। कहानी कहने से एकरूपता आती है और विचार पैदा होते हैं और इससे स्वस्थ समाधान ढूंढने में लोगों की मदद होती है।	• कहानी को साधारण और स्पष्ट रखें, उसमें एक-दो मुख्य बिंदु बनाएं। • यह सुनिश्चित कर लें कि यह कहानी (और चित्र, यदि शामिल किया गया हो) विद्यार्थियों के जीवन से संबंधित हो। • कहानी को इतना नाटकीय बनाएं कि वह रुचिकर हो। कोशिश करें कि इसमें प्रसन्नता, उदासी, उत्तेजना, साहस, गंभीर विचार, निर्णय और समस्या के समाधान वाले व्यवहार को शामिल किया जाए।

जीवन कौशल के दिशानिर्देशों को याद रखना

मैंने पढ़ा, मैं भूल गया, मैंने चर्चा की, मैंने किया, मैंने मन में बिठा लिया

1. जीवन कौशल के लिए वे क्षमताएं आवश्यक होती हैं, जो युवाओं में वास्तविक जीवन में अपने वाली समस्यों से जूझने के लिए प्रोत्साहित करती हैं और उन्हें सक्षम बनाती हैं।
2. जीवन कौशल की शुरुआत ऐसे विवेक से होती है, जो व्यवहार परिवर्तन पर केंद्रित हों या ऐसे विकसित दृष्टिकोण से तैयार की जाती हैं, जिनसे ज्ञान, अभिरुचि और कौशल के तीनों क्षेत्रों में संतुलन बनाया जा सके।
3. जीवन कौशल को वैयक्तिक रूप से ज्ञान, अभिरुचि और जीवन मूल्यों को वास्तविक क्षमता में प्रतिस्थापित करता है। अर्थात क्या करें और इसे कैसे करें, ऐसा करने के लिए कार्यक्षेत्र और अवसर प्रदान करें।
4. जीवन कौशल "कैसे क्षमता को विकसित करें" का कोई रामबाण नहीं है, क्योंकि वे ही ऐसे कारक नहीं हैं, जो व्यवहार को प्रभावी करते हों। सामाजिक सहयोग, सांस्कृतिक एवं पर्यावरण जैसे कई घटक होते हैं, जो अभिप्रेरणा और सकारात्मक तरीके से कार्य करने पर अनुकूल क्षमता विकसित करते हैं।
5. प्रभावी अर्जन और जीवन कौशल के अनुप्रयोग से ऐसी भावना पैदा होती है, जिससे वह दूसरों तथा अपने बारे में सोचता है और इससे उस तरीके पर भी समान रूप से प्रभाव पड़ता है, जैसा लोग हमारे बारे में सोचते हैं। इससे आत्म-विश्वास और आत्मसम्मान की सोच पर भी प्रभाव पड़ता है।
6. मनोसामाजिक जीवन कौशल की क्षमता, अन्य महत्त्वपूर्ण कौशलों से भिन्न होती है, जो युवा लोग अर्जित करेंगे। ये कौशल हैं पढ़ना, गणना, तकनीकी और आजीविका के कौशल।
7. जीवन कौशल शिक्षण एक गतिशीलता प्रक्रिया है। इस पद्धति का उपयोग ऐसी सक्रिय भागीदारी की सुविधा के लिए किया जाता है, जिसमें छोटे-छोटे समूह और युग्मों में कार्य करना, विचारावेश, भूमिका प्रतिरूप, खेल और वाद-विवाद भी शामिल होते हैं।
8. हम सभी निम्नलिखित विभिन्न स्थितियों में जीवन कौशल का उपयोग करते हैं, यथाः

(क) घर, विद्यालय या कार्य स्थल में प्रभावी बातचीत के लिए हमें चिंतन कौशल और सामाजिक कौशल की आवश्यकता होती है।

(ख) जब हम कठिन स्थितियों का मुकाबला करते हैं, तो हम आलोचनात्मक तरीके से सोचते हैं। उस स्थिति के सभी परिणाम का विश्लेषण करते हैं और कठिन लगने वाली समस्याओं के समाधान को ढूंढने के लिए सीमा से बाहर जाकर सोचते हैं।

9. कई जीवन कौशलों पर स्थिति विशेष में प्रभावी ढंग से कार्य करना पड़ता है। इस बीच इस संबंध में विभिन्न जीवन कौशल सर्वेक्षण काम आते हैं। वास्तव में, दी गई स्थिति में जीवन कौशल का समुचित प्रशिक्षण एक कला है।
10. बच्चे अपना जीवन कौशल, अपने माता-पिता, प्रध्यापकों और ऐसे अन्य महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों से सीखते हैं, जो उनके आदर्श होते हैं। वे धीरे-धीरे विभिन्न परिस्थितियों में कौशल विशेष का प्रयोग प्रभावी ढंग से करना सीखते हैं ताकि जीवन की चुनौतियों का सामना किया जा सके।

"हम कई भूलों और कई दोषों के अपराधी हैं, लेकिन हमारा सबसे खराब अपराध, बच्चों का परित्याग और जीवन की नींव की उपेक्षा करना है। हमें जिन बहुत सी चीजों की आवश्यकता होती है, उनका हम इंतजार कर सकते हैं। लेकिन बच्चे नहीं कर सकते। अभी वह समय है, जब उनका आंतरिक एवं बाह्य निर्माण हो रहा है और उसकी अनुभूति का विकास हो रहा है, उसके लिए हम 'कल' उत्तर नहीं दे सकते हैं। उसका नाम 'आज' है।"

गैब्रिला मिस्त्राल, १९४८